

# SPEECHES

BY

His Highness the Maharaja Scindia

Alijah Bahadur

in

1937

GWALIOR



*Published by Authority*



954.043

Ali

Printed at  
The Alijah Darbar Press,  
Gwalior.  
1939

71504 6-8-84  
अवधि संख्या..... दिनांक.....  
निर्देश संख्या...954043/Alc  
नई दिल्ली  
केन्द्रीय पुरातत्व पस्तकालय

No. F.24/84/ Lib. (Misc.) dt. 10.7.84.



## CONTENTS.

Serial No.		DATE.	PAGE.
1.	Speech at the Tennis Tournament Prize Distribution of the Gwalior Young Men's Club.	23- 1-1937	1
2.	Speech at the Opening Ceremony of the Shajapur Water Works and in reply to the Addresses presented by the Citizens of Shajapur.	8- 3-1937	3
3.	Speech at the Farewell Dinner to Mrt. E. C. Gibson, C. I. E., I. C. S., Resident at Gwalior and Political Agent for the States of Rampur and Benares.	24- 3-1937	11
4.	Speech at the State Banquet ..	12- 5-1937	13
5.	Speech in reply to the Addresses presented at Sheopur.	26-10-1937	20
6.	Speech at the Opening Ceremony of the Gwalior High Court.	9-11-1937	29
7.	Speech at the Scindia School Gathering.	11-11-1937	39
8.	Speech at the Laying of the Foundation Stone of the First Jayaji Gwalior Lancers New Lines.	12-11-1937	44
9.	Speech at the Opening Ceremony of the Conference Jagirdaran, Samvat 1994.	12-11-1937	49
10.	Speech at the Bikaner Banquet in reply to the Toast proposed by His Highness the Maharaja of Bikaner.	25-11-1937	61
11.	Speech on behalf of the Ruling Princes at the State Banquet, Bikaner, in reply to the Toast proposed by His Highness the Maharaja of Bikaner.	30-11-1937	64

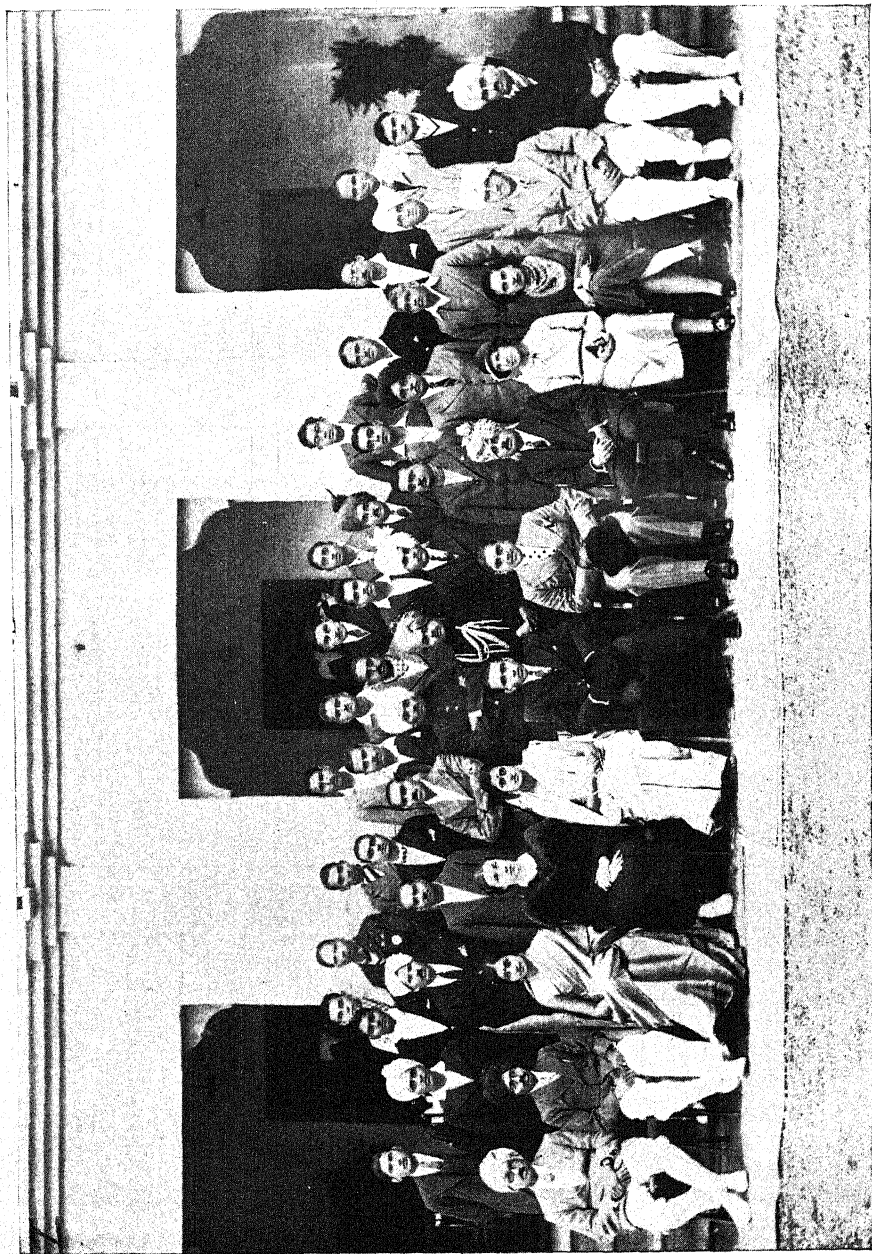
## ILLUSTRATIONS.

---

Serial No.	Facing Page.
1. Tennis Tournament Prize Distribution of the Gwalior Young Men's Club.	1
2. Arrival of His Highness for opening the Shajapur Water Works.	3
3. The Darbar at the opening of Shajapur Water Works.	5
4. Mr. E. C. Gibson, C. I. E., I. C. S., Resident at Gwalior and Political Agent for the States of Rampur and Benares.	11
5. Sheopur Fort where His Highness stayed during his tour.	19
6. Raja Narsingh's Kacheri, Sheopur Fort.	25
7. Justice G. K. Shinde, B. A., Bar-at-Law, introducing the Senior Vakils to His Highness on the opening ceremony of New High Court Building.	29
8. His Highness seeing the Scindia School Museum.	39
9. His Highness' arrival for laying the Foundation Stone of the First Jayaji Gwalior Lancers New Lines.	45
10. His Highness' departure after laying the Foundation Stone of the First Jayaji Gwalior Lancers New Lines.	47
11. His Highness with the Ministers and the Jagirdars at the Jagirdars' Conference, Samvat 1994.	49

---





Tennis Tournament Prize Distribution of the Gwalior Young Men's Club, January 23rd, 1937.



71504

Speech by His Highness at the Tennis  
Tournament Prize Distribution of the  
Gwalior Young Men's Club  
on January 23, 1937.

---

LADIES AND GENTLEMEN,

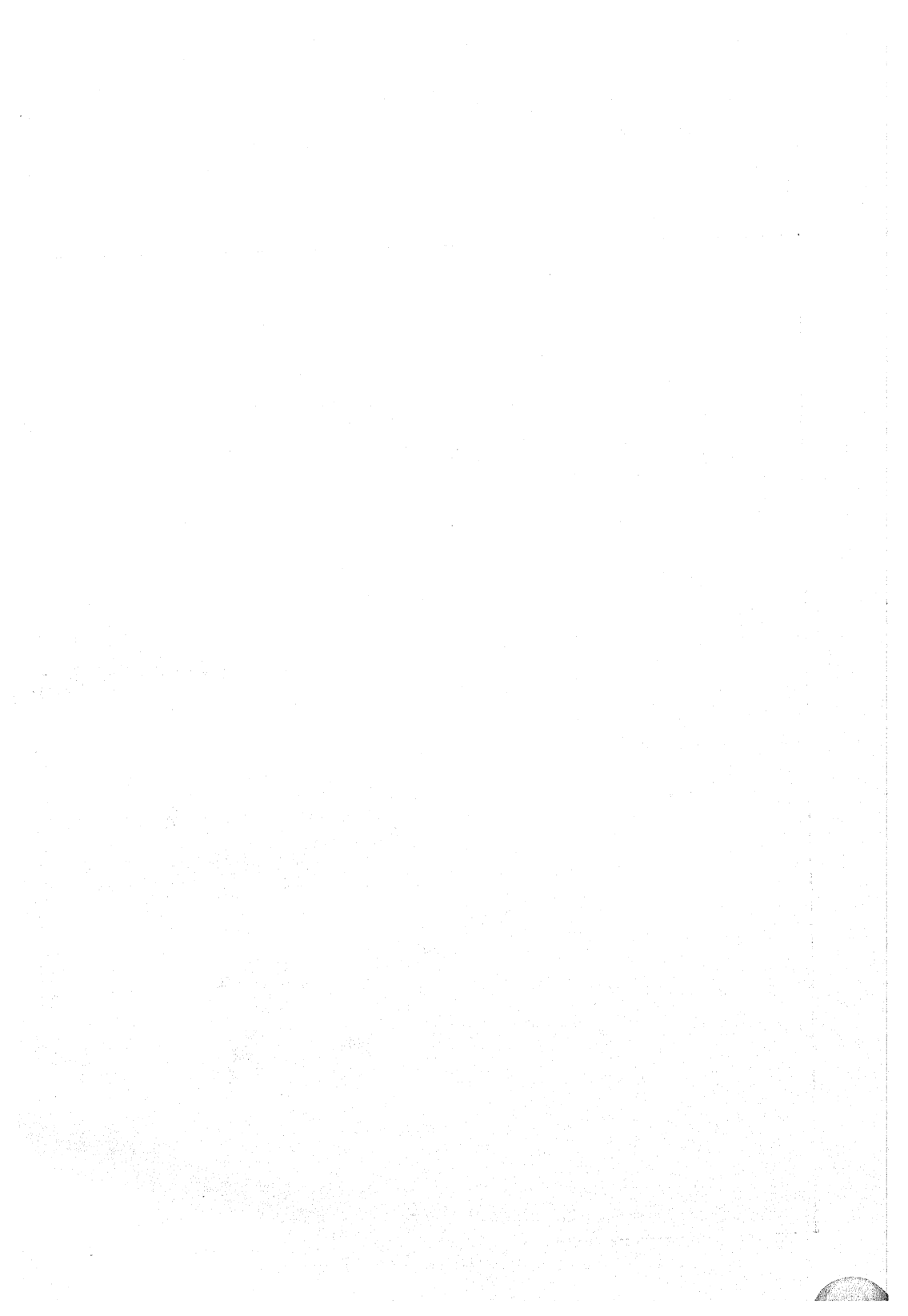
It is a great pleasure to meet you here on this happy occasion. I have listened with great interest the report read by the Secretary of the Gwalior Young Men's Club. Though this is my first visit to this Club, I have been watching its growth with keen interest and appreciation. Though, like most big things, the Club had a small beginning, its continuous growth is a matter of pride for the members of this Club. I particularly appreciate the importance you give to out-door sports. It seems it is not long since the Club has attained majority. It was born in 1914 and at present its age is just 22. Many members of this Club must have grown old, while the Club was just coming of age. But even then it is pleasing to find that you retain the idealism that inspired the founders of this Club to name it as a Young Men's Club, and still emphasise the aspect of out-door physical activity, and mention in-door philosophising only in passing. Let us hope that this spirit will guide the steps of this Club in the coming years and that even though it may grow old in years it will always remain truly a Young Men's

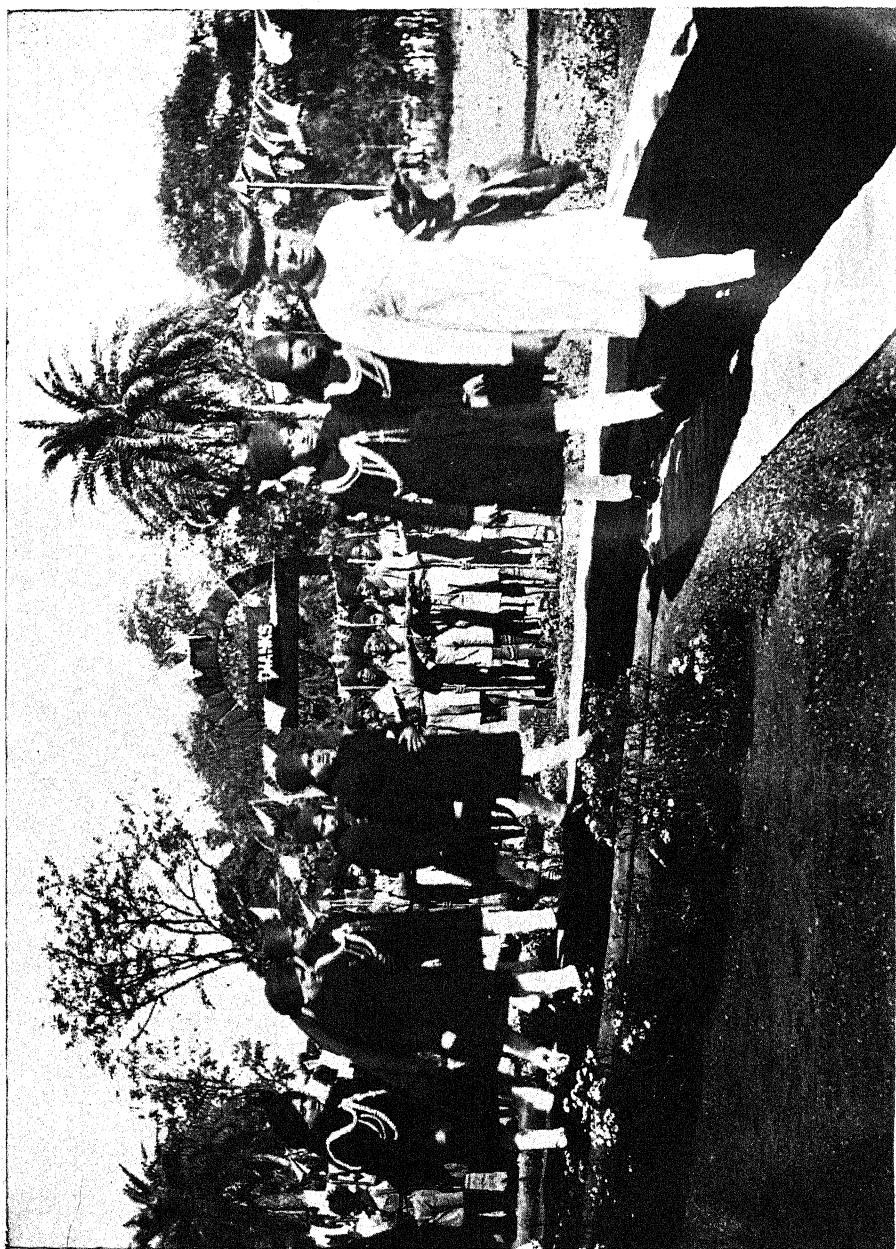
Club. From the account that was just read to us, there is no doubt that this Club has been as clever in getting money out of the pockets of its elders, as in spending it, and I wish it success in this side of its career as well.

Now I shall proceed to perform the most pleasing duty of giving away the prizes in the Tennis Tournaments. But before doing so I offer hearty congratulations to the winners.

Ladies and Gentlemen, I thank you all, and the Secretary and workers of this Club in particular, for bringing about this event.

---





Opening of the Shajapur Water Works : Arrival of His Highness.



॥ श्री ॥

शाजापुर वाटर वर्क्स खोलने के समय पर

और

शाजापुर नागरिकों के मानपत्रों के उत्तर में

श्रीमंत सरकार महाराजा साहब का भाषण.

तारीख ८ मार्च सन १९३७ ई०

शाजापुर—ग्वालियर.

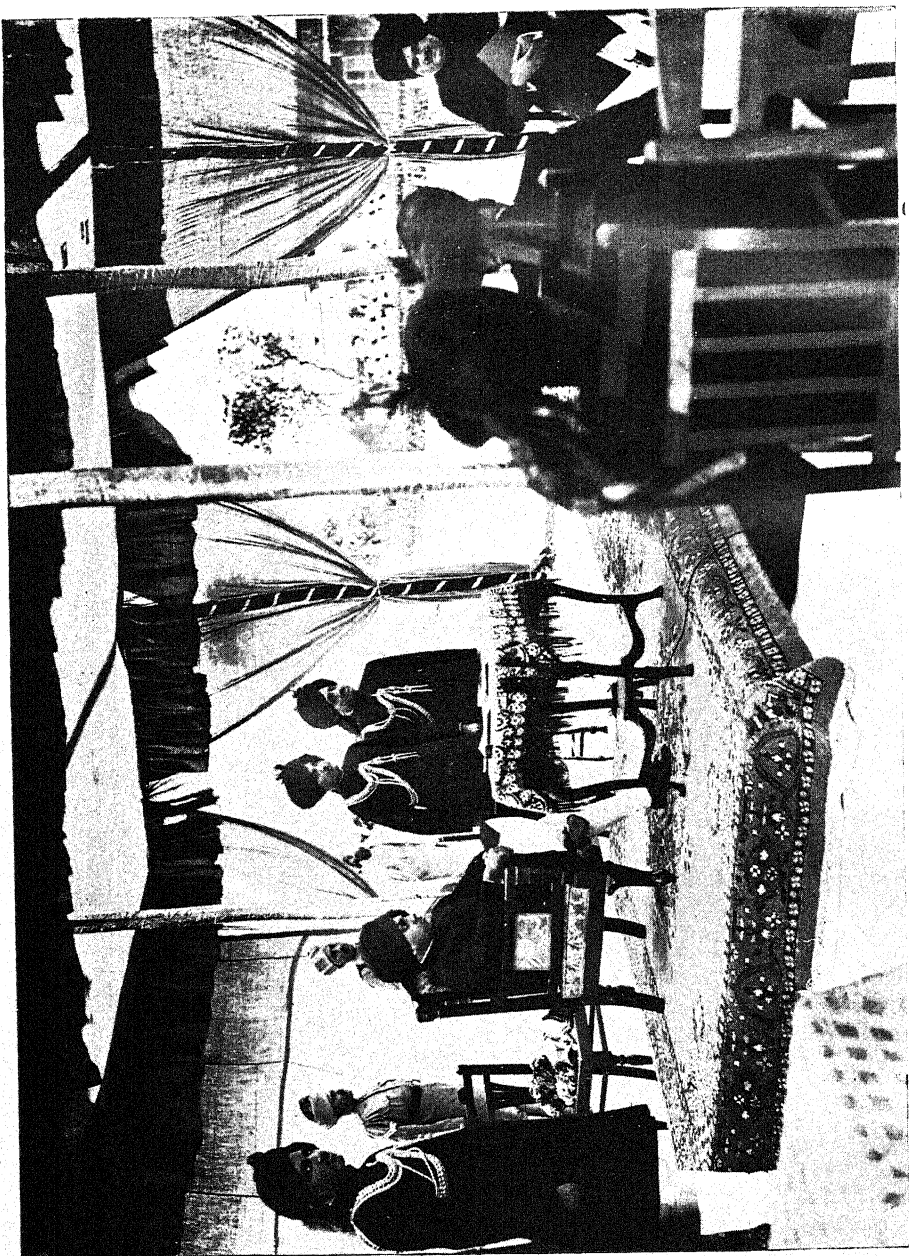
हाजरीन जल्सा,

जिस श्रद्धा, प्रेम और भक्ति के साथ आप साहबान ने मेरा स्वागत किया है उसके लिये मैं आप सबों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ. मेरे लिये इससे ज्यादा संतोषजनक और कौनसी बात हो सकती है कि शासन की बागडोर मैंने अपने हाथ में लेने पर मेरी तमाम रियाया के हर तबके, श्रेणी और संप्रदाय के लोगों ने मिलजुल कर बड़े उत्साह और समारोह के साथ हर्षोत्सव मनाये. अपने राजा और राज्य परिवार के साथ प्रेम रखना और इजहारे वफादारी का अमली सबूत देना हम भारतवासियों की प्राचीन सभ्यता का एक विशेष गुण है; लेकिन साथ ही मैं यह भी बखूबी समझता हूँ कि मेरी प्रजा

की इस तमाम खुशी का खास सबब यह है कि उनको मेरी जाते खास से बड़ी बड़ी उम्मीदें और आशायें भी हैं. यह उम्मीदें कहां तक सफल होंगी इसका परिचय समय ही दिलायेगा. मेरा फर्ज अपनी रियाया की रहबरी करना और बरवक्त जरूरत उनकी दस्तगीरी करना है; मगर इसके साथ ही आप लोगों को भी यह बात हर वक्त ध्यान में रखनी चाहिये कि परमेश्वर भी प्रायः उन्हीं की सहायता किया करते हैं जो अपने हित के लिये स्वयं आप भी पूरी तरह से उद्योग करते हैं.

शाजापुर में पानी की कमी की वजह से जो दिक्कतें और तकलीफें थीं उनका हाल मुझको मालूम है. सन १८९१ की आबादी को देखते हुए सन १९३१ में बजाय तरक्की होने के आबादी करीब करीब २८ फी सदी कम होगई है. इस कमी का एक कारण अफीम की काश्त का बंद होना भी है. खुशी का मुकाम है कि आज मुझको आपके शहर में वाटर वर्क्स खोलने का मुबारिक मौका हासिल हुआ है. मैं इस मौके पर आप साहबान को मुबारिकबाद देता हूं और उम्मीद करता हूं कि साफ और काफी पानी की बढ़ौलत शाजापुर आयन्दा रोज अफजूं तरक्की करता जायगा. इस काम की तकमील का श्रेय महक्मे एज्युकेशन व म्युनिसिपेलिटीज को और सेनिटरी इंजीनियर मिस्टर प्रोकोफीफ को और उस स्टाफ को है जिसकी मेहनत का नतीजा आज से आपको मिलेगा. शहर के हिफजाने सेहत के लिये ड्रेनेज का होना भी निहायत जरूरी समझ कर मैंने ड्रेनेज स्कीम को





Opening of the Shajapur Water Works : The Darbar.

भी मंजूर किया है. अगर इन दोनों तजावीज से शाजापुर के बाशिन्दों की जिस्मानी व माली हालत में तरक्की होगी तो मेरे लिये यह ऐन राहत की बात होगी.

आपके एड्रेसों में बिजली की रोशनी, रेलवे, सड़कें, हाई स्कूल वगैरह खोले जाने की भी ख्वाहिश जाहिर की गई है. मैं खुद चाहता हूं कि रियासत के तमाम इलाकों में काफी सड़कें व दीगर means of communication व हर किस्म के सामान तरक्की व आसायश रिआया को हासिल हों. आपको चाहिये कि अव्वल इस किस्म की जरूरी तजावीज की निस्बत हर पहलू को बखूबी स्टडी करके अपने मुकामी हुक्माम से मशवरा करें और उसके बाद उन्हीं की मार्फत मुकम्मिल तजावीज को सहक्मे मुतअल्लिका में पेश करावें; आपको यह नहीं भूलना चाहिये कि मैं और मेरी गवर्नमेन्ट यथाशक्ति रिफाहे आम के तमाम कामों में आपकी सहायता करेंगे.

जर्मींदार व काश्तकारान को मैं अपनी सल्तनत का मूल स्तंभ समझता हूं; इसलिये तमाम जराअत पेशा लोगों को आज इस मौके पर मैं यह इजहार करता हूं कि उनके मुतअल्लिक मेरा खयाल व मेरी पॉलिसी कदम कदम पर वही रहेगी जो मेरे परम पूज्य पिता कैलास-वासी सरकार की थी. काश्तकारों की इमदाद और बेहबूदी को और भी मजबूत करने की गरज से बमौके इनवेस्टीचर एक करोड़ पच्चीस लाख रुपये के दो नये फंड्स कायम कर दिये गये हैं जो उन जराअती फंड्स के अलावा हैं जिनको मेरे प्रिय पिता ने कायम फरमाया था.

मुझे उम्मीद है कि आप लोगों को इन फंडों से काफी इम्दाद मिलती रहेगी. साथ ही मैं इस अम्र का भी खास खयाल रखूंगा कि आपके नुमाइन्दगान को इन फंडों के संचालन के मुतअल्लिक अपनी राय और जरूरियात के इजहार करने का भी पूरा मौका दिया जावे.

श्रमजीवी तबकों के साथ मेरी पूरी हमदर्दी होना एक स्वाभाविक बात है, क्योंकि श्रमजीवी जीवन व्यतीत करना ही अपना आदर्श समझता हूं. मगर यह याद रखना चाहिये कि श्रमजीवी शस्त्र या श्रमजीवी समाज मैं उन्हीं लोगों को मानूंगा जो अमनो-अमान के साथ रियाया के तमाम दीगर तबकों से मिल जुल कर मुल्क और सोसाइटी की बेहतरी के लिये productive और protective labour करने में मसरूफ हों.

साहबान, यह खयाल ला मुहाला मुझको एक ऐसे मसले की तरफ ले जाता है जिसके असरात इस वक्त तमाम दुनिया में फैल रहे हैं. यह ऐसा अहम और महत्व का सवाल है कि इस पर न सिर्फ ग्वालियर बल्कि तमाम हिन्दुस्तान के लोगों को फौरन गहरे विचार करने की जरूरत है. आपके म्युनिसिपल एड्रेस में मैंने एक जुम्ला खास तौर पर नोट किया है वह यह था:—

“This body is virtually and *de facto* a government of the people, by the people, and for the people and makes the people fully realise the responsibilities and

importance of all measures they adopt for their own well-being as links to the chain of their moral, material and physical development and leads them eventually to that higher goal towards which the whole world is exerting at this moment, *viz.*, the perpetual peace and happiness."

साहबान, इस जुमले को सुन कर मेरे दिल में वही असर पैदा हुआ जैसा कि भादों की अंधेरी रात में जब कि घनघोर घटाओं से मूसल-धार बारिश हो रही हो और आसमान गरज रहा हो, कोई दिलचले साहब अपनी धुन में मस्त होकर फाग अलाप रहे हों. जहां तक कि म्युनिसिपेलिटीज के आदर्शों का तअल्लुक है मैं आपके खयाल को काबिल तहसीन समझ कर 'आमीन' कहता हूं. मगर मौजूदा दुनिया की असली हालत आपकी तसवीर से कोसों दूर है. Perpetual peace तो किसी भाग्यवान को ही इस जिन्दगी के बाद नसीब होती होगी. मगर इस वक्त की दुनिया तो peace और happiness से रोज बरोज दूर भागती हुई नजर आती है.

Peru से Peking तक जिधर देखिये वही आलमगीर कोलाहल मच रहा है, कौमों में कशमकश फैलती जा रही है, एक कौम दस टुकड़ों में टूटकर एक दूसरे के जानी दुश्मन हो रहे हैं, बाप-बेटे में अनबन है, बियां-बीबी में तनातनी खिच रही है, दुनिया के लोग नये नये ideals के पीछे परवानों की तरह गिर रहे हैं और खौफ है कि नामालूम किस वक्त सारी दुनिया में एक तबाहकुन जंग की आग न फैल



जावे. अफसोस इस बात का होता है कि हिन्दुस्तान के लोग भी इसी epidemic (वबा) के शिकार होते जाते हैं.

देखना यह है कि मौजूदा बदअमनियों के खास असबाब क्या हैं और हमारी कौम किस तरह पर उनके जहरीले असरात से मेहफूज रह सकेगी.

साहबान, आसमान के तमाम तारों से लेकर हमारे छोटे छोटे खयालात तक सब एक अटल कानून कुदरत के ताबे काम करते हैं. वह कानून है Law of cohesion and the principle of co-operation यानी मेल मिलाप और सहयोग.

नई तहजीब में आजादी का खयाल दायरा मुनासिब से बहुत आगे बढ़ गया है यहां तक कि Nations की जगह हम Parties के लिये लड़ते हैं और होते होते individualism यहां तक बढ़ गया है कि हमारे हर काम में, हर बात में, separatism की spirit मौजूद नजर आती है. हमारे मुल्क की कदीमी तहजीब में और इस नई civilisation में जमीन आस्मान का फर्क है. हमारे बुजुर्ग मौजूदा जिन्दगी को a means to an end मानते थे, नई तहजीब का लुब्बे लुबाब है "eat, drink and be merry, to-morrow you will die."

सिर्फ एक वर्णाश्रम विधान के मसले को ही लीजिये जिसको कि हमारे दूरअंदेश ब्रह्मज्ञानी बुजुर्गों ने मानव प्रकृति के हर पहलू पर पूरा गौर करके कायम किया था. वर्णाश्रम विधान perfect equality,



inter-dependence और mutual co-operation की मजबूत बुनियादों पर कायम किया गया था. काश जहालत और खुदगर्जियों की वजह से गलतफेहमियां पैदा न की जातीं या न की जावें तो हिन्दुस्तान को न communism की जरूरत थी, न है, न communalism की.

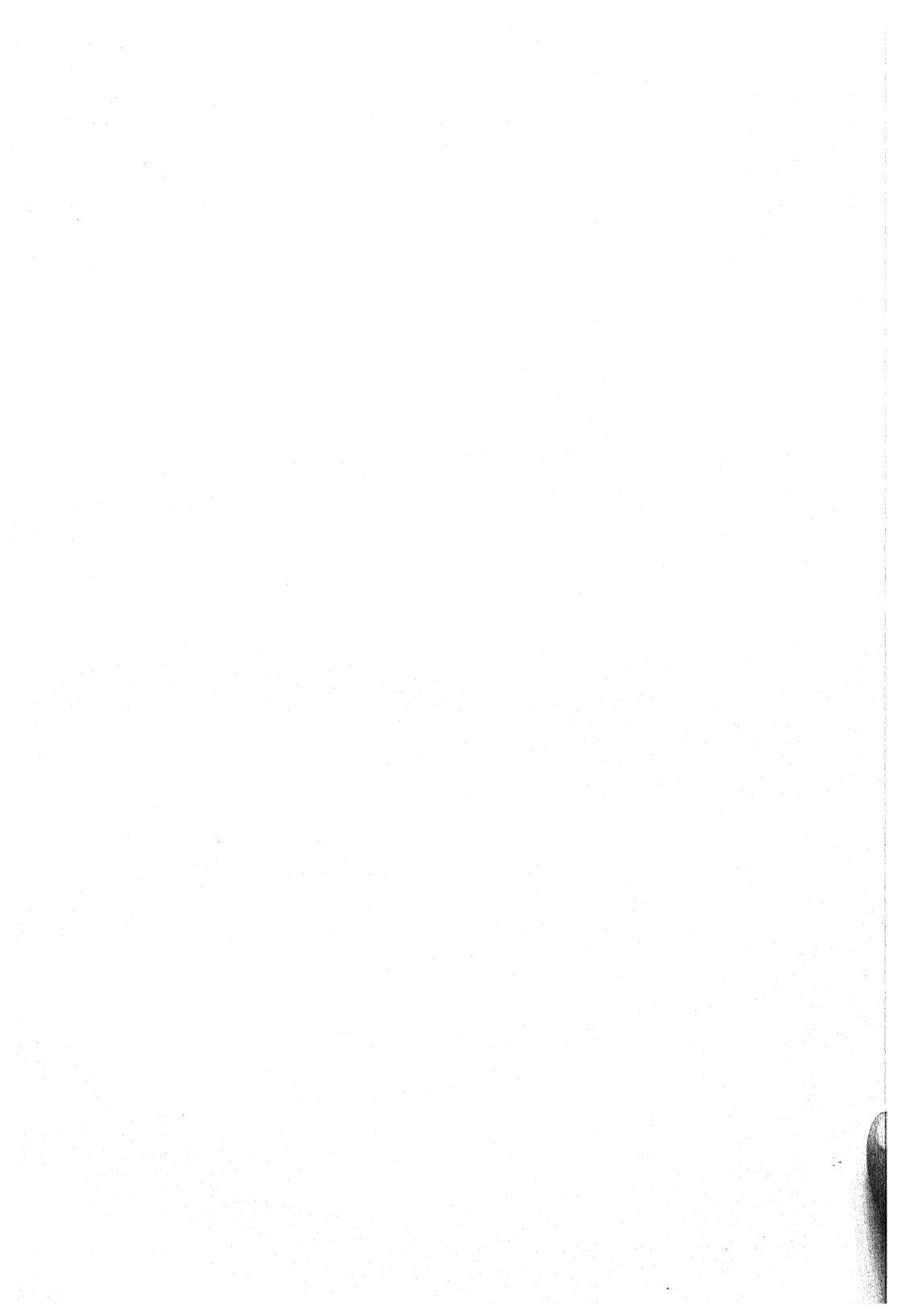
यूरोप materialism का शिकार हो रहा है; मगर समझ में नहीं आता कि प्राचीन भारतीय सभ्यता की गहरी बुनियादों पर हम आंख बंद करके materialistic civilisation की कच्ची इमारतें खड़ी करके अपने मुल्क व कौम का, खास आनेवाली नसलों का क्या फायदा कर सकेंगे. मेरी मन्शा हरगिज यह न समझना चाहिये कि हमको आधुनिक विज्ञान से लाभ नहीं उठाना चाहिये. आप बेशक modern science और modern arts का पूरा फायदा उठाइये; मगर सोसाइटी की जड़ों को, समाज के सुख और शांति को, नुमायशी नये आदर्शों की झूटी चमक दमक के पीछे बर्बाद न कीजिये.

हम आवागमन के माननेवाले लोग हैं. इस जीवन को पार-लौकिक उन्नति का साधन मानते हैं. हमको अपने पुराने धार्मिक आदर्शों को हरगिज न भूलना चाहिये.

मैं ईश्वर से प्रार्थी हूं कि मेरी अजीज रिआया आजकल के separatist tendencies के खतरनाक असरों से मेहफूज रहे और हम सब मिल जुल कर हर मुफीद काम में आपस के रिश्तों को मुहब्बत और

को-ऑपरेशन के मजबूत तअल्लुकात से कायम रखकर दिनोदिन सब प्रकार की उन्नति, पूर्ण शांति के साथ करते जावें. मुझे आशा है कि मेरी यह आवाज मेरी रियासत के कोने कोने तक पहुंचेगी और हम सब मिलकर “रामराज्य” के आदर्श को हासिल करेंगे, जिसके रास्ते पर मेरे कैलासभूषण परमपूज्य पिता के चरणों ने इस राज्य शकट को ला पहुंचाया है.

---





**Mr. E. C. Gibson, C.I.E., I.C.S., Resident at Gwalior and Political Agent  
for the States of Rampur and Benares.**

Speech by His Highness at the Farewell Dinner  
to Mr. E. C. Gibson, C. I. E., I. C. S.,  
Resident at Gwalior and Political Agent  
for the States of Rampur and Benares,  
on March 24, 1937, Jai Vilas, Gwalior.

---

MR. GIBSON, LADIES AND GENTLEMEN,

We have assembled here this evening to wish good-bye and *bon voyage* to our Resident and valued friend, Mr. Gibson, who, I regret to say, will be leaving us very shortly on leave to England. Parting is always a painful penalty which we human beings have to put up with sooner or later as a compensation to nature for the joys and pleasures which life, love and friendship bring in their wake. Although he did not stay for very many years in Gwalior, his presence in our midst during the most eventful period of my career has added special significance to his term of office, and Mr. Gibson's name will, therefore, be always remembered by us on that account. I compute time not merely by the number of hours and days indicated by the clock or calendar but by the magnitude and importance of the events and happenings compressed therein.

Both as a political officer and a man, Mr. Gibson has endeared himself to the heart of Gwalior. He may have been

reserved and reticent at times both from inclination and prudence, but I know that to me he has ever been a sincere friend and a guide and to every one who sought his friendship, advice or assistance he has been the readiest and most reliable of helpers. It is but natural, therefore, that Mr. Gibson has been the recipient of such popularity among every section of society.

As a sportsman, Mr. Gibson has been a most conspicuous figure in Gwalior, and I think I am voicing the feelings of all present here when I say that in the departure of Mr. Gibson the Gwalior sports world is losing its greatest asset. In the history of broadcasting in Gwalior Mr. Gibson's name will likewise be remembered because it was his voice which was first carried over the air from Gwalior—on the occasion of Tansen's anniversary—though the famous tamarind and Tansen did not inspire him to sing, but only to speak !

Ladies and Gentlemen, I do not wish to keep you any longer from the pleasure of wishing Mr. Gibson a safe journey home, a complete rest and an early return to India, and I ask you all to join me in drinking most warmly to the health and future happiness of our valued friend, Mr. Gibson.

---

## Speech by His Highness at the State Banquet on the 12th May 1937, Jai Vilas, Gwalior.

---

COLONEL FISHER, LADIES AND GENTLEMEN,

It is my proud privilege now to rise and ask you all present here to join me in honouring the Toast to the health and continued happiness of His Imperial Majesty the King-Emperor and the Royal Family, and in doing so I feel confident that you will give it a most hearty reception.

It is not customary on ordinary occasions to make a long speech in giving the Royal Toast; but, as you are all aware, the present occasion marks a unique and auspicious event of great significance in the annals of our times. This day has witnessed the solemn and historic ceremony of the Coronation of King George VI and his Royal Consort Her Majesty Queen Elizabeth. Amidst scenes of unprecedented pomp, pageantry, and glamorous splendour, London, the great Metropolis of the British Empire and the centre of the world, is celebrating the event of the accession to the Throne of a new and universally beloved Monarch. The enthusiasm of Britain radiates naturally to the furthest corners of the Empire; it touches and finds an echo in the hearts of one quarter of the world's population. India is reckoned to be the brightest jewel of the British Crown; and Gwalior is known to be the heart of India. So it is this spontaneous urge of a joyful heart which makes me

yield to the temptation of giving expression to my feelings on this occasion.

Gentlemen, in India, more than in any other country in the world, loyalty to the Person and Throne of the Sovereign constitutes a sacred religious precept. It is a sentiment which endures and sustains us even under the most trying conditions of life. When I look back to the past history of my House, with special reference to our relations with the British Crown, I realize feelingly that loyal friendship and devoted service has been the most zealously guarded tradition of my House ever since the day on which the first Treaty of Friendship and Alliance was ratified between my illustrious ancestor Maharaja Mahadji Scindia and the representatives of the British Government.

Colonel Fisher, before I proceed further, I wish to request you as the official representative of the Paramount Power at my Court to convey to Their Majesties my respectful Greetings and an expression of my warmest felicitations and homage on their accession to the Imperial Throne. In doing so, will you be good enough further to communicate to His Imperial Majesty my dutiful assurances that whether in peace time or in times of war I will always strive to co-operate loyally with His Majesty's Government with a determination to advance this ancestral heritage of mine to a level of peace, progress and resourcefulness commensurate with my share of the partnership in His Majesty's vast Empire, an Empire known to-day as the Commonwealth of free Nations? God forbid that the world be faced again with the grim horrors of another great war! But if such a war be inevitable, I take this opportunity of solemnly



declaring on behalf of myself, my Government, my nobles, and the four million people whom I have the honour to rule as their first servant, that the entire might and resources of my dominions shall be placed unreservedly at the service of His Majesty.

Ladies and Gentlemen, here I wish to emphasise the fact that my devotion to the cause of the Empire is based not only on the tradition of loyalty to which I have referred above, but also on the knowledge, understanding, and a full realization of the facts that the British connection has proved to be a real blessing to India; that this happy consummation has been brought about by Divine Will and under Divine Dispensation; and that on the continued solidarity and unimpaired might of the British Empire would depend the safety, security, peace and prosperity of India as well as the ultimate emancipation of our Motherland.

I will now say a few words about the significance of the great event of to-day. The Coronation of a new Sovereign is always a romance full of historic and religious significance. For fifteen centuries there have been Kings in Britain and for three hundred years there has been one Kingship. But as far as I am concerned the Coronation of King George VI will ever stand out in bold relief in my memory. The primary reason, of course, is that this is the first Coronation of the King-Emperor held during my lifetime. But the principal reason is based on those sentimental ties which draw me to the Royal House.

The British Empire has been most fortunate since the reins of its destiny were placed in the hands of the Sovereigns of the present Dynasty. From the great Queen Victoria of revered memory down to Edward VII, George V, Edward VIII, and our

present King-Emperor, there has been a continuous succession of patriotic, progressive and benevolent Sovereigns whom the people of India dearly esteem and will always remember. It was during the rule of the House of Windsor that England emerged from medievalism to modernity, and the British Empire attained the zenith of its greatness and glory. The reign of King George V will ever be remembered for the wonderful advance made in the realms of art and science, an advance which has revolutionized life and wrought tremendous changes in the basic ideas and general outlook of humanity. And judging from the popular point of view I believe no succession was hailed with such universal jubilation as that of our present King. The following description of His Majesty gives the cue to his great popularity: "Highly serious and conscientious, as domesticated as his father, the man who now takes up the exacting burden of kingship is the most sedate of the four royal brothers. Perhaps also the shyest. Yet, that he possesses a strong will to serve and is willing to take up a position which he never sought is in itself an indication of the splendid characteristics that lie behind a modest and unassuming character."

Of British birth and royal lineage our Queen has already attained an extraordinary measure of public esteem and love owing to her sweetness of character and the examples she sets of a simple, peaceful, and happy domestic life with her royal husband and her two charming daughters. By the invaluable public services Her Majesty has been rendering selflessly in a calm and serene spirit and unostentatious manner, the Queen has more than captured the hearts of her people.

To-day the Empire is thrice blessed, not only because the King and the Queen have entered upon their new role of life

under the happiest of auguries, but because the rest of the Royal Family also from Her Majesty Queen Mary whom I may venture to call the Mother of the Empire, down to the most junior member of the House—all are consistently and perseveringly solicitous of public welfare. Nowhere else could we find Royalty so foremost in the patronage and advancement of all that is best in public life.

Before I close I wish to express my sincere pleasure at the presence in our midst of my esteemed friend, Colonel Fisher, our new Resident. Though new to the place the brilliant record of service and achievements that stands to his credit and the very looks and balance of his distinguished personality inspire me with the fullest confidence that I can always turn to him for that touch of sympathetic guidance and help which I may wish to seek from an officer and a gentleman of his age, experience, and standing in life. To His Excellency the Viceroy I owe very sincere thanks for the invaluable advice and assistance I have received, and I am glad to say that His Excellency's desire and efforts to improve the lot of the rural masses has evoked due response in my State. An elaborate scheme for rural development is under consideration of my Government and will be launched at an early date.

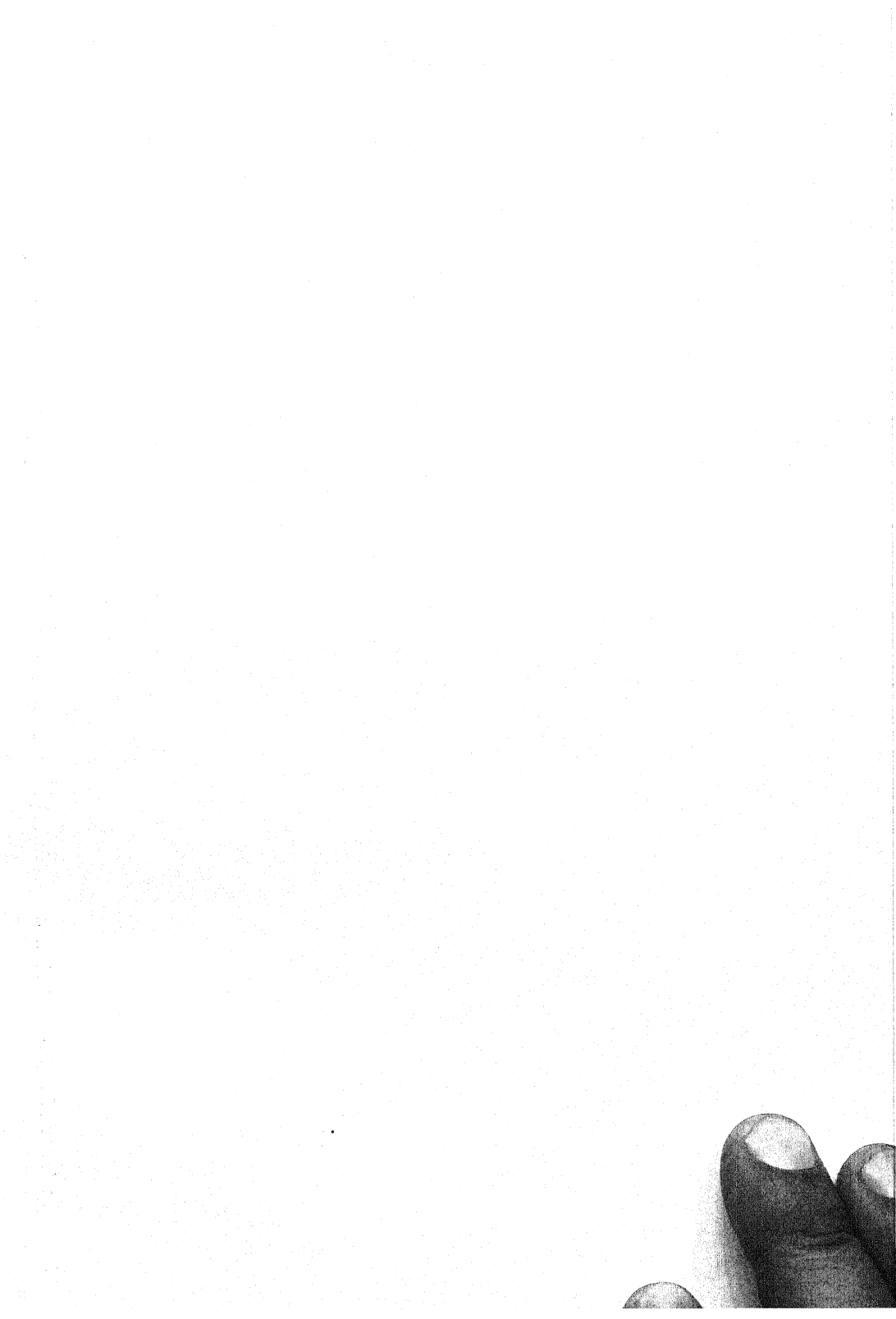
My greatest ambition in life is to do all that lies in my power to make Gwalior a model State. It is already the main artery of the country's road and railway communication and I hope that in the field of aviation also Gwalior will be an equally prominent centre. Various important reforms to improve the efficiency of the public services and the utility of various public institutions are engaging my attention. I need hardly stress the fact that

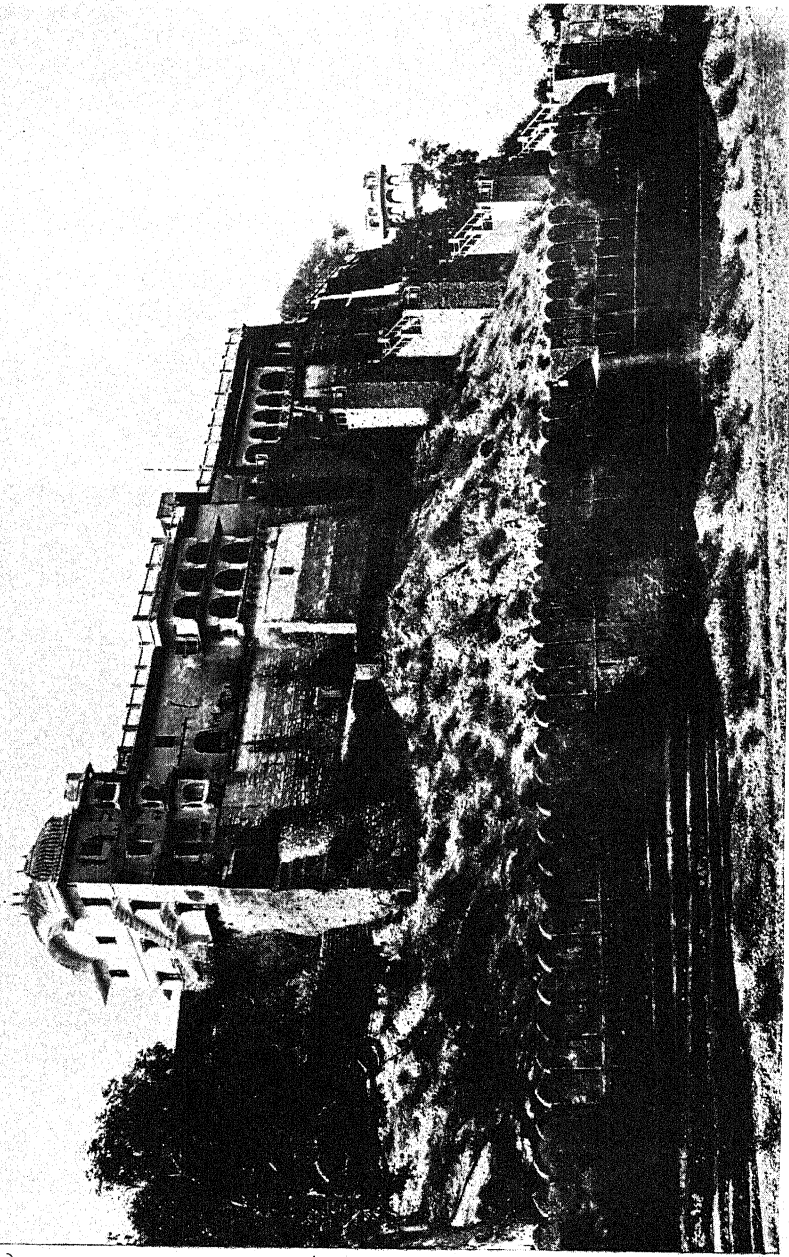
the efficiency and success of every public institution and undertaking must largely depend on two factors, namely, the financial potentialities and a sound fiscal policy, and the loyal and willing co-operation of all officers of the State and the systematic co-ordination of the public services. Writing about the great achievements of my great Father Sir William Barton in his recently published book "The Princes of India" says : "Gwalior is now one of the best administered States in India. This is largely due to the genius of the late Maharaja whose untimely death in 1925 was a great loss both to Gwalior and India generally. Always a loyal supporter of the British Crown, he played a fine part in the Great War. With a budget that would turn a post-War Finance Minister green with envy he built up a great trust fund for the economic development of his country." His late Highness' financial policy and the results thereof still constitute the bulwark and the mainstay of my administration. I congratulate Mr. Carson for his wise forethought and for the strenuous efforts now being made by him to re-establish that policy. Mr. Carson, it is with sincere pleasure that I take this opportunity of expressing my warmest appreciation of the valuable services you are rendering to me and the State.

Ladies and Gentlemen, here is the Toast to the health, happiness and ever-increasing prosperity of our beloved King-Emperor and the Royal House.

God save the King !

---





Sheopur Tour : South-west view of the Sheopur Fort where His Highness stayed during his tour.

॥ श्री ॥

**श्रीमंत सरकार महाराजा साहब का  
हस्व जैल संस्थाओं के अभिनन्दन-पत्रों के जवाब में  
भाषण.**

तारीख २६ अक्टूबर सन १९३७ ई०

शोपुर—ग्वालियर.

१. म्युनिसिपल कमेटी, शोपुर.
२. बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स, हिस्सेदारान, पंचान व मेम्बर्स  
को-ऑपरेटिव बैंक व को-ऑपरेटिव सोसाइटीज, शोपुर.
३. श्रीमाधव क्लब, शोपुर.
४. अंजुमन सेफिया बोहरान, शोपुर.
५. अंजुमन इस्लाम.
६. जमींदारान व काश्तकारान, शोपुर.
७. दिगम्बर जैन बंधु, शोपुर.
८. मण्डी कमेटी, शोपुर.
९. अग्रवाल समाज, शोपुर.
१०. महाराष्ट्रीय ब्राह्मण समाज.



॥ श्री ॥

**मुख्तलिफ अभिनंदन-पत्रों के जवाब में  
श्रीमंत सरकार महाराजा साहब का भाषण.**

तारीख २६ अक्टूबर सन १९३७ ई०

शोपुर—ग्वालियर.

---

हाजरीन जल्सा,

आज मुझको आप सब साहबान से मिलकर निहायत खुशी हासिल हुई. जिस गौरव और गहरी मुहब्बत के साथ बाशिन्दगान जिला शोपुर ने मेरा स्वागत किया है उसके लिये, और खासकर आपके सच्चे वफादाराना जजबात के लिये मैं आपका तहेदिल से मशकूर हूँ. इससे ज्यादा तसल्लीबख्श और मसरत की बात और क्या हो सकती है कि जो तअल्लुकाते-मुहब्बत व वफादारी मेरे माननीय पूर्वजों के जमाने से हुक्मराने-मुल्क और रियाया के दरमियान कायम हैं वह बदस्तूर उसी तरह और उसी हालत में मुझको भी अपनी आंखों से देखने का मौका मिल रहा है. हमारी मजमूई आरजू और दुआ यही है कि परमेश्वर हमारे इन तअल्लुकात को हमेशा महफूज रखे और उनमें रोज अफजूं नुमायां तरक्की होती रहे.



मुझे मालूम है कि स्वर्गवासी सरकार, मेरे पूज्य पिताजी, शोपुर अक्सर तशरीफ फर्मा हुआ करते थे. मैं खुद यहां आना चाहता था, लेकिन हुकूमत की जिम्मेदारियों का बार लेने के बाद मैंने मुनासिब यह समझा कि सबसे पेशतर मुझको अपनी सल्तनत के दूर दराज इलाकों का दौरा करना चाहिये, और यही वजह मेरे सबसे पहिले जिला मन्दसौर का दौरा करने की थी. मेरी यह दिली ख्वाहिश और कोशिश भी है कि अपनी रियासत के हर हिस्से का दौरा करके सब इलाकों के मुकामी हालात की वाकफियत हासिल करूं और अपनी अजीज रियाया के दुःख-सुख का, उनकी जरूरतों का पूरा अन्दाजा करता रहूं.

आप साहबान के जबानी यह सुनकर कि हुकूमत की तरफ से आपके आराम और आसायशों का हमेशा ध्यान रखा जाता है, मुझे ऐन राहत हासिल हुई. मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मेरी हुकूमत के जमाने में भी मैं और मेरी गवर्नमेन्ट हत्तुलमकदूर आपकी हर मुनासिब जरूरतों को और आपकी तमाम जायज ख्वाहिशों को रफा और पूरा करने की कोशिश करते रहेंगे. मगर इसके साथ मुझे इस बात को हर मौका मुनासिब पर दोहराने की जरूरत महसूस होती है कि दुनिया में इन्सानी कामयाबी और सुख, सन्तोष और शान्ति की प्राप्ति के लिये राज और प्रजा के दरमियान और प्रजा के मुख्तलिफ तबकों और जमाअतों के माबैन co-operation, यानी सहयोग, की सख्त जरूरत है. हमारी जिन्दगी का कुल दारोमदार

सहयोग पर मुनहसर है. स्टेट मिस्ल एक खानदान मुश्तर्का के एक मजमूर्ई इन्स्टिट्यूशन है. इसको हम एक घड़ी के साथ भी मुशाबहत दे सकते हैं. घड़ी एक ऐसी मशीन होती है जिसके अन्दर बीसियों पुर्जे जुदागाना शकल व साइज के पैवस्त होते हैं. अगर एक पुर्जा भी अपनी असली जगह से हटता है, या बिगड़ जाता है, या उसमें मैल आजाता है तो दीगर तन्दुरुस्त और सही पुर्जे भी अपना काम देने के काबिल नहीं रहते; और नतीजा यही होता है कि घड़ी बेकार होकर काम देना बन्द कर देती है. पस मेरी आप लोगों से यह दरखास्त है कि आप में से हर फर्द बशर, हर कौम, जमाअत और इन्स्टिट्यूशन को यह बखूबी समझ लेना चाहिये कि स्टेट एक बेश कीमती घड़ी है और आप लोग उसके पुर्जे हैं.

सहयोग यानी co-operation के लिये हम सब लोगों में public spirit का होना लाजमी बात है. Public spirit से मुराद उस खयाल इन्सानी से है जिसके असर से एक इन्सान खुदगर्जी की गुफा से बाहर निकल कर, परोपकार और परमार्थ के रोशन क्षेत्र में उतर आता है. Public-spirited इन्सान की निगाह में उसका गांव, उसका शहर, उसका जिला और उसका तमाम मुल्क उसको खास अपना ही घर, और वहां के रहनेवाले लोग उसको खास अपने ही कुटुम्बी दीख पड़ते हैं. ऐसा उदारचित्त इन्सान तन, मन, धन लगाकर समाज सेवा करने को तैयार रहता है. यही वजह है कि आज योरोप और अमेरिका उन्नति के शिखर पर पहुंचे हुए हैं. वहां के बारिशदों में

public spirit कूट कूट कर भरी हुई होती है. उन मुल्कों के लाखों स्कूल, कॉलेज, युनिवर्सिटिमें, अस्पताल, अनाथालय वगैरह पब्लिक इन्स्टिट्यूशन्स में से बहुत बड़ी तादाद गैर-सरकारी हैं; जिनके लिये वहां के समाज-सेवी धनीजन करोड़ों पाउन्ड-स्टरलिंग अपनी कमाई हुई सम्पत्ति से दान देते रहते हैं या छोड़ जाते हैं. जापान के बाशिन्दे अपने मुल्क और अपनी कौम की बेहतरी और तरक्की के लिये अपनी जान तक को कुर्बान कर देना बड़े फख्र की बात समझते हैं. यही सामाजिक co-operation की जिन्दा मिसालें हैं जिससे हम लोगों को भी सबक लेकर अपने मुल्क, अपनी रियासत और कौम को फायदा पहुंचाना चाहिये. मुझे पूरी उम्मीद है कि मेरी रियासत में भी public-spirited लोगों की तादाद दिनों दिन बढ़ती नजर आवेगी. इसमें शक नहीं कि इस किस्म के खुशानसीब लोग लोक, परलोक दोनों का यश पावेंगे. मैं ऐसे लोगों की सच्चे दिल से पूरी पूरी कद्र करूंगा.

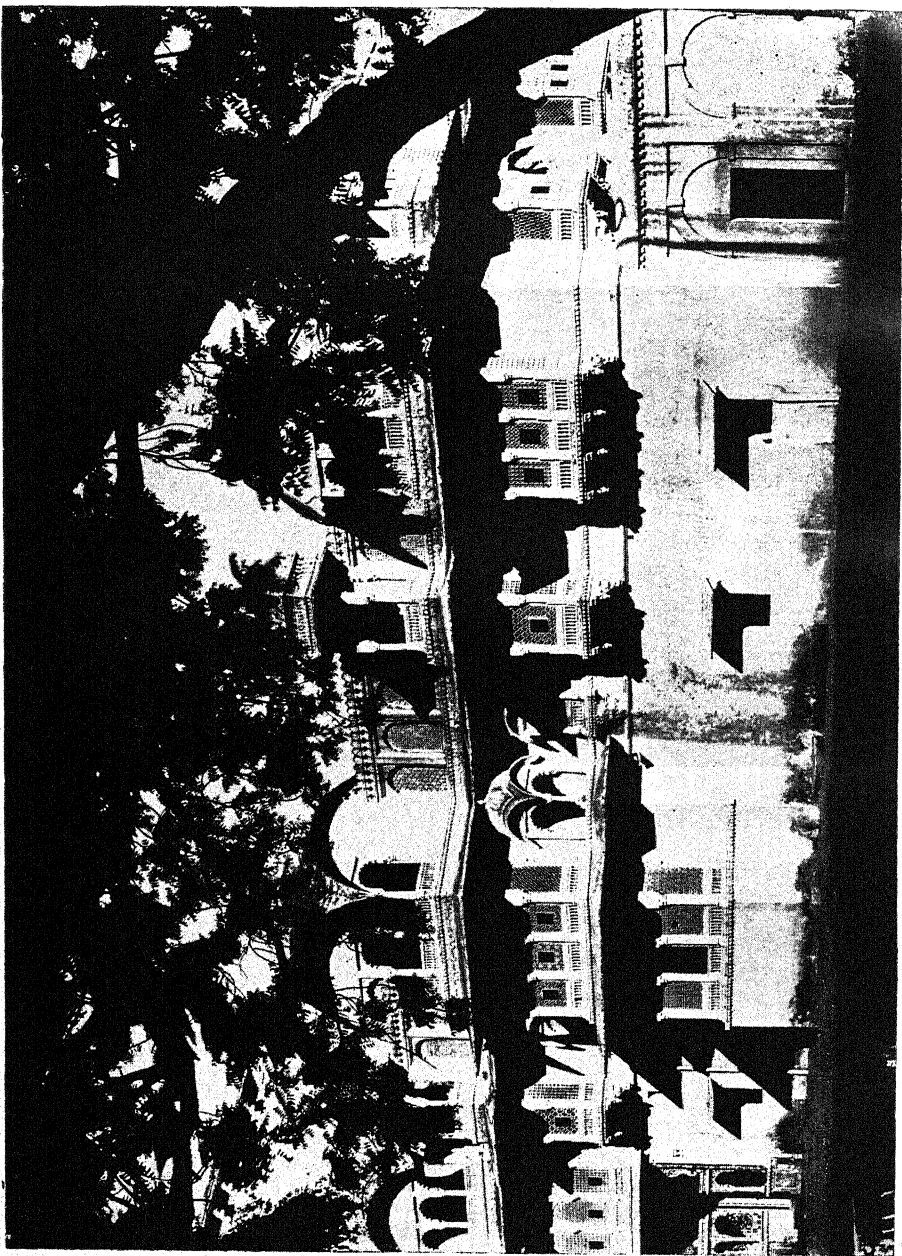
म्युनिसिपैलिटी शोपुर ने मेरी तबज्जोह ड्रेनेज की जरूरत पर दिलाई है. और काश्तकार व जमींदारों ने ग्राम-सुधार के कामों में अपनी शिरकत, पानी की तकलीफ, और जमींदारों को कुर्की जायदाद-जमींदारी से महफूज रखे जाने की दरख्वास्त की है; साथ ही जंगलों में कुछ रियायतें मिलने की भी इस्तदुआ की है. इसी तरह पर सड़कों में इजाफा करने का और ग्वालियर लाइट रेलवे के extension का सवाल भी मेरे पेश नजर किया है. मैं मानता हूं कि

रियासत में means of communication, यानी आमदोरफ्त के जराये होना निहायत जरूरी है. ऐसे मुफीद कामों को जहां तक जल्द हो वुसअत देते जाना मेरी इन्तजामी पॉलिसी की खास मंशा है. रफता रफता यह तमाम सहूलियतें आपको बहम पहुंचाई जावेंगी. मगर इसके साथ साथ आपको यह समझ लेना चाहिये कि इन कामों के लिये काफी सरमाये और वक्त की भी जरूरत होती है. रियासत को तरक्की देने के लिये हमको मुस्तालिफ जिलों में बतदरीज काम शुरू करने होंगे और अगर ईश्वर की तरफ से मदद काफी मिली तो मैं उम्मीद करता हूं कि चंद सालों में ही रियाया की तकलीफ और जरूरियात को रिफाह आम के कामों को तरक्की देकर जल्द रफा किया जावेगा.

मगर साथ ही मैं आप लोगों को यह भी मशवरा देना चाहता हूं कि मामूली मुआमलात और हालत में आपको हर नई तजवीज को मुनासिब मशवरा करने के बाद अपने मुकामी हुक्म की मार्फत महकमा मुतआल्लिका में पेश करना चाहिये. अगर ऐसा हुआ और रिफाह आम के कामों में public-spirited साहबान ने भी शिरकत करते हुए मेरी गवर्नमेन्ट का हाथ बटाया तो इससे बढ़कर तसल्लीबख्श सूरत और कोई नहीं हो सकती.

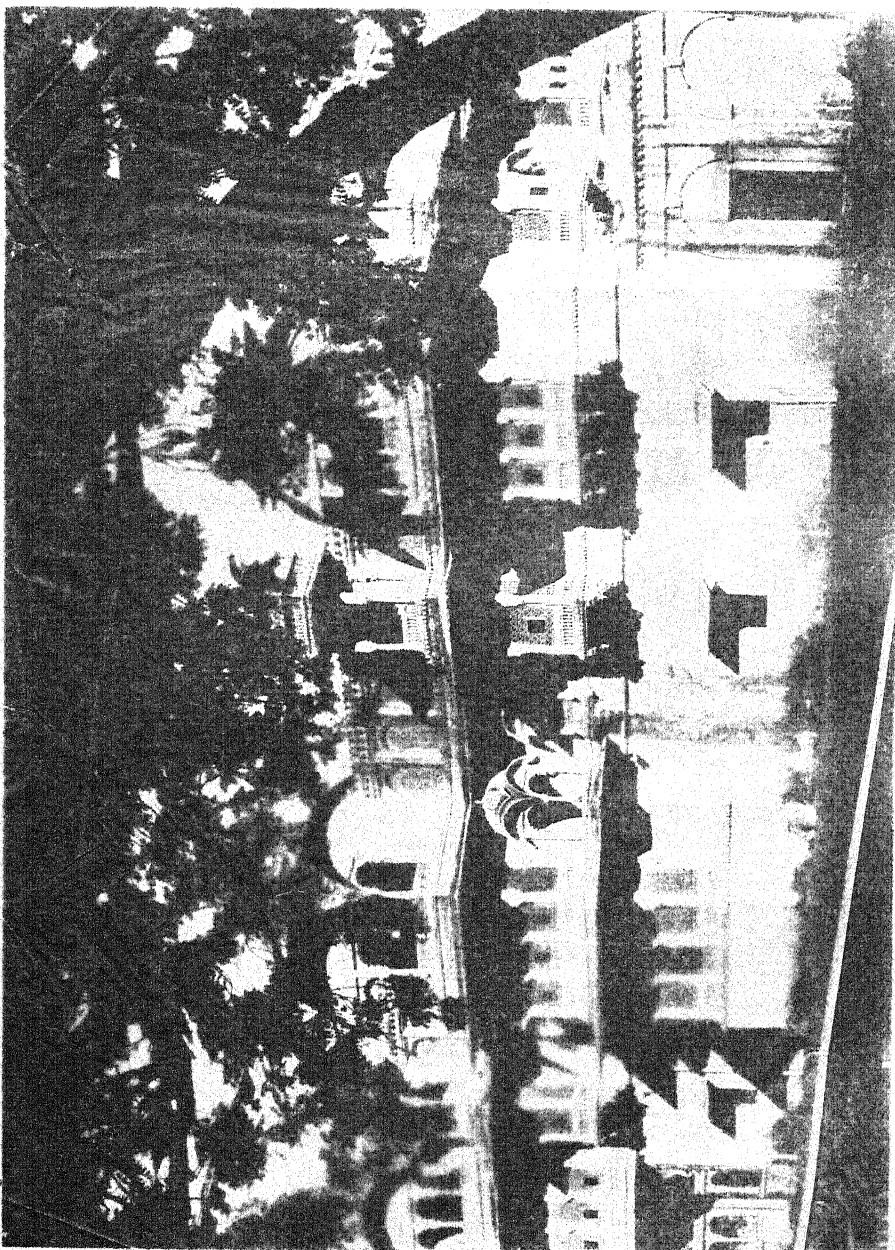
जमींदार और काश्तकार तबकों की निस्वत मेरी कहां तक हमदर्दी है उसका इजहार मैं अपनी पिछली तकरीरों में कई बार कर चुका हूं. जंगलों में जो रियायतें आप चाहते हैं उनकी





Sheopur Tour : Raja Narsingh's Kacheri, Sheopur Fort.





Sheopur Tour: Raja Narsingh's Kachheri, Sheopur District.



खुसूसियत के साथ आपने कोई तशरीह नहीं की है. जैसा कि मैंने ऊपर मशवरा दिया है आप अपनी जरूरियात को हस्ब जान्ता मुकामी ऑफिसरान की मार्फत दरबार में पेश करें. निस्बत सवाल तरमीम कानून माल बहक़े जर्मीदारान, मेरे खयाल में ऐसे अहम मसले को सरसरी तरीक पर तय नहीं किया जा सकता. कानून एक ऐसी चीज है जिसको निहायत व कमाल तजुर्बे, बहस और गौर के बाद तैयार किया जाता है. चुनांचे रायजुलवक्त कानून में तरमीम तन्सीख करने का सवाल एक ऐसा मसला है जिसको आप मजलिस आम में पेश कर सकते हैं.

मुझे अंजुमन इस्लाम और अंजुमने सेफी बोहरा जमाअत के, नीज महाराष्ट्रीय ब्राह्मण समाज के वफादाराना जजबात को देखकर खास खुशी हासिल हुई है. मैं उम्मीद करता हूं कि रियासत के साथ और दीगर कौमों व मिछ्तों के साथ आयंदा भी आप साहबान के वही खैरख्वाहाना और पुरमुहब्बत तअल्लुकात कायम व बरकरार रहेंगे, जिसपर मुझको मिस्ल मेरे बुजुर्ग मूरिसों के, व साथ ही आप लोगों को भी मुनासिब फख है. आपके मदरसों की तरक्की का हाल सुनकर मुझे खुशी हुई. मैं उम्मीद करता हूं कि आप साहबान आयंदा भी अपने आपको रियासत की तरफ से पूरी हमदर्दी और मुनासिब इमदाद के मुस्तहिक साबित करेंगे. आपके मदरसों को जरूरी इमदाद पहुंचाने की तजवीज एज्युकेशन डिपार्टमेन्ट की जानिब से जरूर की जावेगी.

Co-operative Bank के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स से मुझे यह उम्मीद है कि वह अपने इन्स्टिट्यूशन की बहुत जल्द इस्लाह करके उन शिकायात को रफा करेंगे जो आज तक न सिर्फ बाइसे बदनामी बल्कि नुकसान कसीर की जिम्मेदार साबित हुई हैं. मैं उम्मीद करता हूं कि इस जिले के सरकारी व गैर-सरकारी कारकुनान व मेम्बरान इस तहरीक को, कि जो काश्तकारान की बेहबूदी के लिये कायम की गई थी, उसके असली मकसद तक पहुंचाने की कोशिश करेंगे.

जमींदार व काश्तकार तबकों की इस ख्वाहिश के साथ कि ग्राम-सुधार का काम उन्हीं की शिरकत और तवस्सुत से लिया जावे, मुझे पूरी हमदर्दी है, और मैं आप लोगों को यकीन दिलाता हूं कि आपके इस खयाल व ख्वाहिश की ताईद मेरी गवर्नमेन्ट हर मुमकिन हद तक जरूर करेगी.

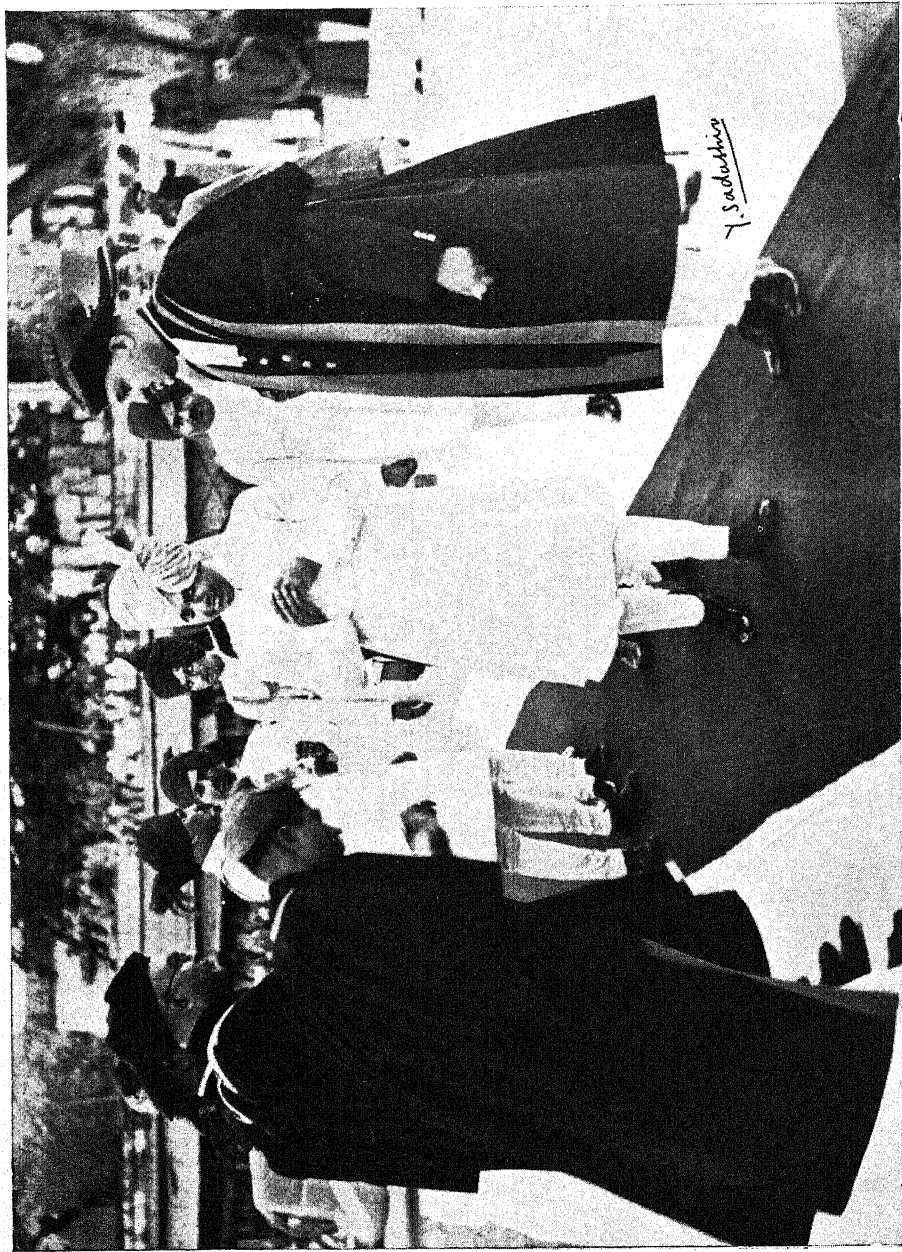
अब अखीर में मैं आप जुम्ला साहबान की तवज्जोह एक ऐसे अहम मसले की तरफ दिलाना चाहता हूं कि जिसमें आपको और मुझको एकसां दिलचस्पी है. वह सवाल है जाति-सुधार का. आप जानते हैं कि depressed classes के लोगों के साथ मेरी कहां तक हमदर्दी है. मैंने हुकूमत की बागडोर अपने हाथ में लेते ही सब से पहिले ऐलान में अपनी हमदर्दानी पॉलिसी का इजहार कर दिया था. वह पॉलिसी मेरे अहदे हुकूमत में बदस्तूर और मजबूती के साथ कायम रखी जावेगी. मगर, साहबान ! सुधार, खासकर मजहबी मुआ-

म्लान में सुधार करना, कोई आसान काम नहीं है जैसा कि चन्द गैर जिम्मेदार लोग समझते हैं. मेरा अपना खयाल तो यह है कि हिन्दू जाति की चारों जातियाँ एक दूसरे के लिये लाजमी हैं; और समाज में उन सब का महत्व बराबर है. मगर जैसा कि मैं ऊपर बयान कर चुका हूँ कि घड़ी के एक पुर्जे को भी अदल-बदल कर देने से उसके सारे पुर्जों पर असर पड़ जाता है, ठीक उसी तरह “अछूत” कहलानेवाली कौमें हमारी दीगर जातियों के साथ वाबिस्ता हैं. उनकी इसलाह करते वक्त उन दीगर जातियों को भी अपने साथ लेना जरूरी है. इसके बिना काम नहीं चल सकता, बल्कि बजाय सुधार के बिगाड़ और अबतरी पैदा होजाने का अहतमाल और अन्देशा है. दूर खड़े होकर नुक्ताचीनी करना और बिला सोचे-समझे किसी को बदनाम करने की कोशिश करना, नाआकबतअंदेशी की दलील है. जो काम सहूलियत और मेल जोल से हो सकते हैं उनको सब्र और दानाई के साथ रफ्ता रफ्ता अंजाम देना चाहिये. जो लोग इन मुश्किलात को जानबूझकर नजर अंदाज करते हैं और रियासत की पुर अमन रियाया में बैचैनी और बदअमनी फैलाने की कोशिश करते हैं, उनको आगाह किया जाता है कि वह इस तरीके से बाज रहें; क्योंकि कोई हुक्मत इस किस्म के घातक propaganda को बरदाश्त नहीं कर सकती. जो लोग ऐसी पद्दलित कहलानेवाली जातियों का सुधार चाहते हैं और शान्तिमय यानी constitutional रास्तों पर चलकर

काम करना चाहते हैं वही उन जातियों के सच्चे शुभचिन्तक मित्र समझे जा सकते हैं; और ऐसे सज्जनों को मेरी हुक्मत मशवरे से और तन, मन, धन से मदद देने को तैयार है. मगर जो अशर्वास टट्टी की आड़ में शिकार खेलने की कोशिश करेंगे, या महज खुदगर्जी से ऐसे कामों को उठायेंगे, और गवर्नमेन्ट और उसकी अजीज रिआया के दरमियान, या रिआया की मुस्तलिफ जमाअतों और कौमों में कर्शी-दगी पैदा करने की कोशिश करते हुए पाये जायेंगे, उनके साथ सख्ती के साथ कानूनी सलूक किये जाने में कोई रिआयत न की जावेगी. मुझे यकीन कामिल है कि मेरी अजीज रिआया मेरे इन खयालात को दिल में जगह देकर गैर जिम्मेदार मुफसिद लोगों की चालों और नुमायशी हमदर्दी से अपने आपको महफूज रखेगी. मैं और मेरी गवर्नमेन्ट हर मुनासिब तरीक पर नुकसान पहुंचानेवाली पुरानी रूढ़ियों को हटाने की कोशिश में मसरूफ हैं, और रहेंगे. लिहाजा रियासत की हर कौम को चाहिये कि वे मुकामी हुक्माम से मशवरा व इम्दाद लेकर, दीगर कौमों से मिल-जुल कर, अपनी हालत को सुधारें. इसमें हत्तुलइमकान उनको दरबार से पूरी पूरी मदद दी जावेगी.

साहबान, अब मैं फिर एक बार इस दिली इस्तकबाल के लिये आपका शुक्रिया अदा करता हूं और उम्मीद करता हूं कि आप मेरे खयालात की अपने अपने तबकों में पूरी इशाअत करेंगे. मेरी ईश्वर से हमेशा यही प्रार्थना रहती है कि उनकी हम सबों पर पूरी दया दृष्टि बनी रहे और वह हमको हमेशा सुख और शांति के रास्ते में चलावें !





Opening Ceremony of the Gwalior High Court : Justice G. K. Shinde, B. A., Bar-at-Law, introducing the Senior Vakils to His Highness.

ग्वालियर हाई कोर्ट बिल्डिंग  
के  
उद्घाटन करने के शुभ अवसर पर  
श्रीमंत सरकार महाराजा साहब का भाषण  
तारीख ९ नवम्बर सन १९३७ ई०  
लश्कर—ग्वालियर.

---

साहबान हाजरीन जल्सा,

आपने जिस आदर और प्रेम से मेरा स्वागत किया है उसके लिये मैं तहेदिल से आपका शुक्रिया अदा करता हूँ. यह बड़ी खुशी की बात है कि मेरे राज्यशासन के थोड़े ही अर्से बाद आज मुझको आप सब साहबान की मौजूदगी में इस खुशनुमा बिल्डिंग में हाई कोर्ट और मुकामी मातहत जुडीशियल अदालतों के उद्घाटन करने का मौका हासिल हुआ. हाई कोर्ट की शान, दरबार की प्रतिष्ठा और पब्लिक की आसायश को मद्देनजर रखते हुए मेरे खयाल से यह बिल्डिंग हर तरह पर मौजू और योग्य होगी.

ग्वालियर रियासत की मौजूदा न्याय पद्धति का संगठन और संचालन मेरे परम पूज्य पिता ने किया था जिसको मैं निहायत फख



के साथ आधुनिक ग्वालियर का maker समझता हूँ. इस रियासत का मौजूदा इन्तजाम और इसकी पायेदारी और तरक्की का श्रेय वैकुण्ठवासी सरकार मेरे परम पूज्य पिता को ही है. उस महान् आत्मा की यादगार कायम रखने के लिये आज इस बिल्डिंग में मैं उनकी Statue का भी उद्घाटन करता हूँ. मुझे पूर्ण विश्वास है कि पूज्य पिता की यह प्रतिमा हम सबों के लिये न्याय और सच्चाई के रास्ते पर चलने में हमारी गाइड और source of inspiration साबित होगी.

साहबान, “सदर अदालत” की जानशीन इस हाई कोर्ट को कायम हुए तीस साल से कुछ ज्यादा अर्सा गुजर चुका है. मुझको भी इस बात का जिक्र करते हुए दिली खुशी और फख है कि हमारी गवर्नमेन्ट हिन्दुस्तान की उन चन्द हुक्मतों में से एक है जिसने जुडीशियल और executive महक्मों को सबसे पहिले एक दूसरे से अलहदा और बिलकुल आजाद कर दिया. खासकर एक देसी रियासत में इस बड़ी इसलाह का पूरी तौर पर कामयाब साबित होना हम सब लोगों के लिये खास खुशी और फख की बात है.

दरबार के बाद अदालत हाई कोर्ट रिआया की आजादी और उसके कानूनी अधिकारों और जिम्मेदारियों की मुहाफिज और संरक्षक है. हाई कोर्ट सल्तनत की तमाम जुडीशियल अदालतों की आला निगरां और मार्गदर्शक है. दरबार के prestige, कानून की पवित्रता और रियासत की नेकनामी कायम रखने की सारी जिम्मेदारी बड़ी हद तक

जुडीशियल अदालतों की आम तौर पर और हाई कोर्ट की खास तौर पर है. खुद मेरी नेकनामी का दारोमदार भी मेरी अदालतों की खुश इन्तजामी और सच्चाई पर निर्भर है; क्योंकि ऑफिसरान जुडीशियल को खास तौर पर मेरे representative होने का ऐजाज हासिल है और यह समझना चाहिये कि इन्साफ की हर अदालत में मेरी ही रूहे रवां का प्रकाश मौजूद है. अदालतों का सबसे बड़ा फर्ज व जुडीशियल ऑफिसरान का सबसे बड़ा धर्म, तराजू के कांटे की तरह तुला हुआ इन्साफ देना है और रियाया का भी यह मुकदम फर्ज है कि वह हुसूल इन्साफ के लिये अदालतों के साथ सच्चाई और नेकनियती के साथ को-ऑपरेशन करे और मुनासिब ताजीम और तकरीम के साथ उनके जायज अहकाम की तामील बजा लाने में किसी किस्म का पसोपेश न करे.

जैसा कि ऊपर बयान किया गया है मुल्क की अदालतों, बिल-खुसूस आला अदालतों का रुतबा मिस्ल एक शाही दरबार के होता है. इसी खयाल से तमाम सभ्य देशों की अदालतों में लिबास व कवाअद, हिफ्जे मरातिब खास किस्म के रखे जाते हैं. आला अदालतों मिस्ल हाई कोर्ट्स ऑफ जुडीकेचर में नशिस्त, बरखास्त व इजलास की खास रस्मियात रायज हैं. अदालतों में बैच और बार के मेम्बरान को किस किस्म का लिबास पहनना चाहिये, और हाई कोर्ट जैसी आला अदालतों में इजलास के वक्त क्या क्या रस्में अदा हुआ करेंगी इसके बाबत यहां भी हिदायतें जल्द ही जारी की जावेंगी.

मगर यहां यह भी जाहिर कर देना चाहता हूं कि पोशाक और रस्मियात की शान तब ही जेबा देगी कि जब हमारी अदालतों का standard of efficiency और इन्साफ वैसा ही ऊंचे पाये का होगा जैसा कि दरअसल होना चाहिये. आदर्श जज में सब से बड़ा गुण जो होना चाहिये वह है उसका open mind. उसका खयाल आइने की तरह राग और द्वेष दोनों से پاک होना चाहिये. इल्म के साथ साथ इखलाक, और इखलाक के साथ जज के मिजाज में इस्तकलाल भी होना चाहिये. Honesty, Industry और Self-control यानी नेकनियती, काम में दिलचस्पी और मेहनत, और अपने दिल और दिमाग पर पूरा पूरा काबू रखना, यह तीनों बातें ऐसी लाजमी हैं कि जिनका वजूद हर पब्लिक मुलाजिम में अमूमन, और हर हाकिम अदालत में खास तौर पर नुमायां हद तक होना चाहिये, चाहे मुआम्ला कितना ही गैर दिलचस्प क्यों न हो, चाहे गवाह कितना ही जाहिल और कम अक्लवाला क्यों न हो, कोई काबिल जज हरगिज किसी को यह महसूस नहीं होने देगा कि वह मुकद्दमे की समाअत में दिलचस्पी नहीं रखता, या यह कि गवाह के बयान पर उसकी तबज्जोह ही नहीं है. मुकद्दमे में जीतना या हार जाना यह तो एक तरह से तकदीरी अम्र है यह ही कहा जा सकता है; मगर कमरे इजलास से बाहर निकलकर अगर हर दो फरीक के दिलों में जज की गैर तरफदारी और मुआम्ला फेहमी का भरोसा और पूरा इत्मीनान हो तो यह उस जज की लियाकत

और मुन्सिफ मिजाजी का सबसे बड़ा सुबूत होगा. इसके साथ हर अक्लमंद और फर्ज सनाश जज इस बात को भी अपने जहन में रखेगा कि मुकद्दमे का मुद्दत दराज तक जेर तजवीज पड़ा रहने देना बहुत बुरी बात है. याद रखना चाहिये कि मुनासिब वक्त पर फरियादी की हक्करसी न होना, ठीक वक्त में किसी को इन्साफ न देना भी एक बड़ी बेइन्साफी, बल्कि जुल्म है. यही सबसे बड़ा ऐब है कि जो अदालतों को बदनाम कर देता है और एहले मुआम्ला की बरबादी का बाइस होता है.

साहबान, यह बात जाहिर है कि हिन्दुस्तानी कौम मुकद्दमेबाजी के लिये खास तौर पर बदनाम है. इसके कई कारण हैं. जहां तक मैंने इस प्रश्न पर विचार किया है इसके मूल कारण दो हैं—पहिला हिन्दुस्तान में विद्या का अभाव, दूसरा मुल्क की गरीबी और नादारी. विद्या प्रचार को सरगमीं से बढ़ाने की तरफ मेरी शुरू से ही पूरी तवज्जोह है, क्योंकि जब तक मुल्क में तालीम की तरक्की न होगी तब तक तंगदस्ती से छुटकारा नहीं मिल सकेगा, और न जहालत दूर हो सकेगी; मगर सबसे बड़ी खराबी जो इस बदनामी का बाइस है उसकी जिम्मेदारी बहुत हद तक खुद फरीकैन पर आयद होती है. झूटी गवाही यह अदालतों की बुराई की जड़ है, ईश्वर के साथ छल है. फरीकैन मुआम्ला में से फी सदी ऐसे कितने आदमी निकलेंगे जो अपने सीने पर हाथ रखकर यह कह सकते हों कि हमने अदालत में जाकर न तो झूटी कसम खाई, न झूटी शहादत दी. जिसने अपना ईमान खोया उसका अंत में भला नहीं हो सकता.

जहां तक मैंने जुडीशियल हालात पर गौर किया मेरे खयाल में मौजूदा खराबियों का analysis इस तरह पर होता है यानी हमको इन बुराइयों को दूर करने की फौरन जरूरत है. वह बातें यह हैं:—

- ( १ ) बिला जरूरत मुकद्मात में तारीखें बढ़ाते जाना ( जिसकी जिम्मेदारी अदालतों पर है ).
- ( २ ) फरीकैन मुआम्लात का झूटा हलफ उठाने से न डरना और गवाहान का झूटी शहादतें पेश करना ( इसकी जिम्मेदारी खुद फरीकैन और उनके गवाहान पर आयद होती है ).
- ( ३ ) बाज लोगों के खुदगर्जी की वजह से दूसरों को गलत मशवरा देकर गलत रास्ते पर ले जाना और अदालतों को धोके में डालना.
- ( ४ ) अदालत के दफ्तरों और अमलों में नवग्रह पूजन की कुप्रथा का बाजार गरम होना, जिधर देखिये सिवाय “चांदी” के किसी बात की चर्चा नहीं है.

इस न्यायालय के उद्घाटन के वास्ते मैंने खास तौर पर बजाय चांदी के लोहे की चाबी का इस्तेमाल करना पसन्द किया. इससे मेरी खास मुराद यह है कि मैं आप सब साहबान को यह जहन नशीन करादूं कि मैं यह नहीं चाहता हूं कि मेरी अदालतें किसी भी हालत में चांदी की चाबी से खुलें.

इन्साफ फौलाद की तरह मुफीद और मजबूत होना चाहिये, इन्साफ मिस्ल फौलाद के जंग से पाक होना चाहिये, इन्साफ लोहे की तरह कम खर्च और बालानशीन होना चाहिये, जिसका फायदा हर शख्स, चाहे कितना ही गरीब हो, आसानी के साथ पा सके. लोहा गुनहगारों के हाथों के लिये हथकड़ी, जरायम पेशा लोगों के पैरों की बेड़ी है, मगर ईश्वर भक्त और अमन पसन्द आदमियों की मुहाफिजत की तलवार है.

वकील साहबान से मैं निहायत अदब के साथ यह कहना चाहता हूं कि आप लोग, जो इल्म और कानून के माहिर होने की वजह से दरबार भी आपकी इज्जत बढ़ाना चाहते हैं; मगर जब मैं देखता हूं कि कानून के चक्कर में पड़कर बहुतसे गरीब लोग और उनके खानदान और बाल बच्चे तक जेरबार और बरबाद हो जाने पर भी सर पटकते फिरते हैं और इन्साफ नहीं पाते, तो मैं हैरान होकर सोचने लगता हूं कि क्या वकीलों की तादाद बढ़ने देना दुनिया के लिये मुफीद होगा? गालिबन आप मेरा मतलब समझ गये होंगे. जिस तरह डाक्टरों का फर्ज अपने मरीज को जल्द से जल्द आराम पहुंचाना है उसी तरह वकील और मुल्तार साहबान का भी लाजमी फर्ज है कि वह पहिले अपने मुवक्किल की बेहतरी और बेहबूदी को मद्देनजर रखें और अपना नफा उसके बाद सोचें. मुझे फाजिल मेम्बरान बैच और बार दोनों से यह आशा है कि वह इस मसले पर तवज्जोह के साथ जल्द ध्यान दें और मौजूदा



खराबियों और बदअमलियों की रोक के मुतअल्लिक दरबार को मुफीद मशवरा दें. अगर जरूरत हुई तो इस मुआम्ले में जरूरी लेजिस्लेशन भी किया जा सकेगा.

हुसूल इन्साफ के सिलसिले में मुझे पुलिसवालों से भी चन्द जरूरी बातें कहनी हैं. अगर मुलाजिमान पुलिस इन्सदाद जुर्म और सुरागरसी में अपना फर्ज मनसबी दिल लगाकर करें तो मैं समझता हूं कि फौजदारी अदालतों का काम बहुत कुछ घट सकता है. पुलिस रियाया के जान और माल की मुहाफिज है. उसका फर्ज बदमुआशान की सरकोबी करना और शरीफों की सेवा और कमजोरों की इमदाद करना है. दरबार ने तनखाह का स्केल बढ़ाकर education और training का मयार ऊंचा करके पुलिस फोर्स की utility बढ़ाने की कोशिश की है, और मैं इस उम्मीद में हूं कि पुलिस की efficiency का असर जुडीशियल अदालतों के काम में भी देखूं. मगर जब मैं पुलिस के चन्द मुलाजिमान की सच्ची शिकायतों पर निगाह डालता हूं और देखता हूं कि बाज बाज इलाकों में चौकियों के लोग मसनूई तनाजे खड़े करके थानों में वकूआत पेश करते हैं या दफा ५४ का बेजा इस्तेमाल करते हैं तो मुझको सख्त रंज पहुंचता है. पुलिस का फर्ज जुडीशियल अदालतों को पूरी इमदाद देना है और वह अदालतों को मदद तभी दे सकेंगे जब उनके दिलों में ईश्वर का खौफ, दरबार की वफादारी और रियाया की बेहबूदी को पूरी पूरी जगह हो. मैं, मेरे पुलिस फोर्स को जलील और बदनाम



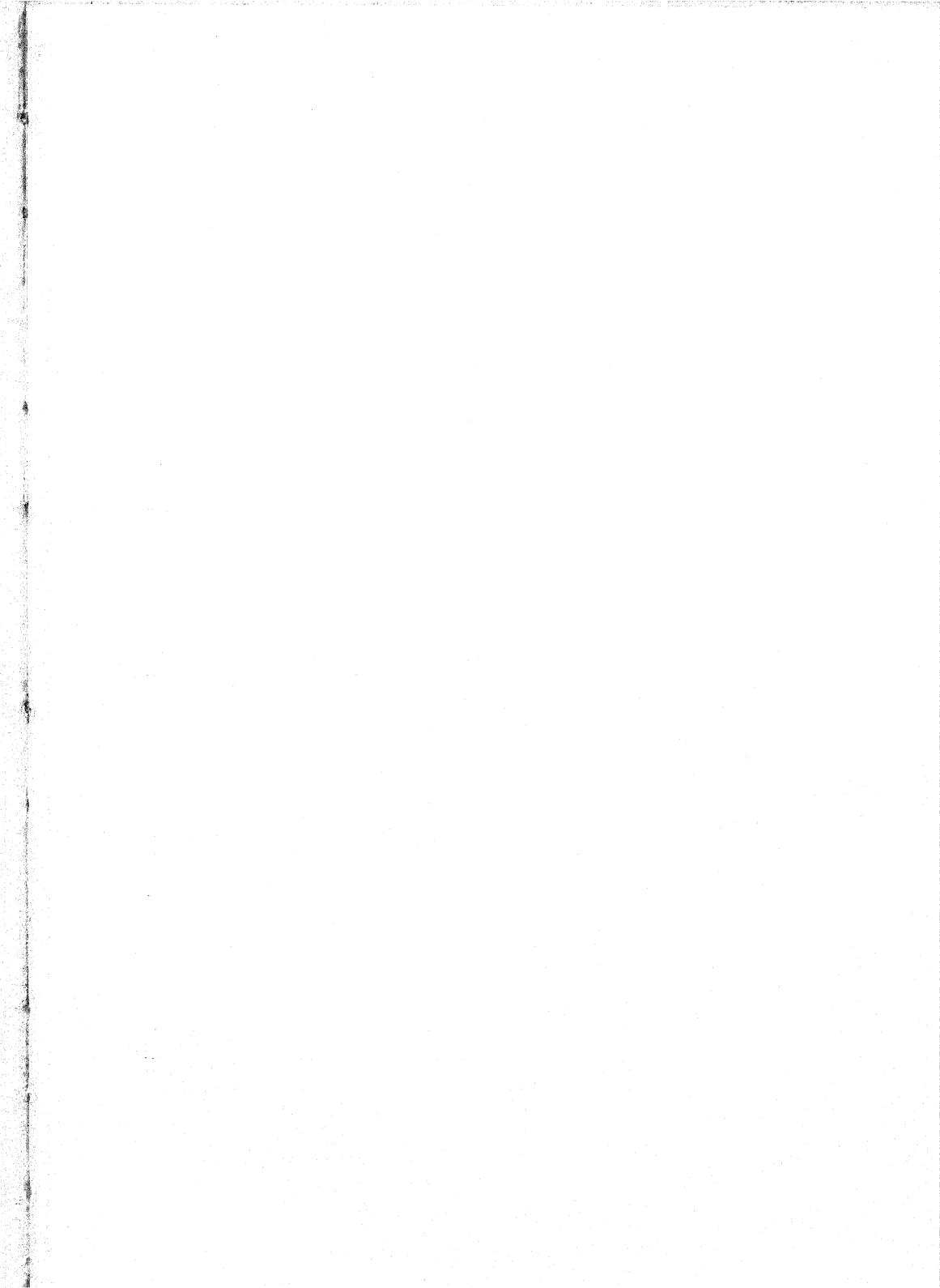
करनेवाले मुलाजिमों के साथ हरगिज कोई नरमी या रियायत नहीं करूंगा और जो लोग नेकनियती, शराफत और बहादुरी के साथ अपनी ड्यूटी को अंजाम देंगे और रियाया की निगाह में इज्जत और हरदिल अजीजी हासिल करेंगे उनकी हर तरह पर हौसला अफजाई और कद्र की जायगी. साथ ही साथ मैं ऑफिसरान अदालत से इस्तदुआ करूंगा कि वे पुलिस की जानिब से आनेवाले कुल मुआमलात को शक की नजर से न देखें. कभी कोई केस ऐसी हुई हो तो उसके मानी यह नहीं होते हैं कि कुल मुआमलात, जो बजानिब पुलिस दायर हों, सब के सब झूटे और फर्जी होते हैं. मुख्तसिरन मेरी मुराद यह है कि हर दो डिपार्टमेन्ट्स एक ही गवर्नमेन्ट के जुदा अंग हैं और उनका फर्ज है कि वह अपना अपना काम ईमानदारी से और मेहनत से अंजाम दें.

रियाया की भलाई और बेहबूदी मद्देनजर रखते हुए मैं यह जरूरी समझता हूं कि रियाया को एक दोस्ताना मशवरा दूं. यह मानी हुई बात है कि मुकदमेबाजी में बिला वजह पैसा खराब होता है, मुवकिल खुद जेरबार होते हैं, और दूसरे लोग परेशान होते हैं; गरज यह कि फायदा किसी को नहीं होता. इसलिये कोशिश यही करना चाहिये कि आपस के झगड़े मिल जुल कर ही बिरादरी और पंचों के बीच बचाव से निपट जावें. अगर अदालत तक पहुंचना जरूरी ही हो तो शरीफ और तजुर्बेकार वकीलों का मशवरा लेकर स्वार्थी और चालाक लोगों के फंदे से बचना चाहिये.

जिस तरह रिश्वत लेना जुर्म है उसी तरह रिश्वत देना भी संगीन जुर्म है; इसलिये लोगों को न तो किसी मुलाजिम अदालत को रिश्वत देकर अपना काम निकालने की कोशिश करना चाहिये और न झूटे बयान और गवाही देकर अपना लोक परलोक बिगाड़ना चाहिये. इसी गरज से कि हर मुआम्ले में प्रजा को अदालत का दरवाजा न खटखटाना पड़े, हर जगह पंचायत बोर्ड्स कायम किये गये हैं. अगर उनका ठीक ठीक उपयोग किया जावे तो उनको ज्यादा इख्तियारात दिये जा सकते हैं. इसी मकसद को ध्यान में रख कर मैंने यह तरीका डाला है कि आयन्दा ऐसे जुडीशियल ऑफिसर्स रखे जावें जो कम से कम बी. ए., एलएल. बी. हों. पर इन सुधारों का मकसद तभी हासिल हो सकता है जब रिआया की तरफ से झूटे मुआम्लात कम रुजू हों और हर शख्स सच झूट का ध्यान रखे.

जहां तक मेरे जाते खास का तअल्लुक है मैं खुशी के साथ इस मौके पर यह ऐलान करता हूं कि मैं, स्वर्गवासी सरकार मेरे परम पूज्य पिताजी के high idealism, उनकी noble spirit और उदार नीति की न सिर्फ अपने अंतःकरण से कद्र और ताजीम करता हूं बल्कि दिल में यह आरजू और तमन्ना भी रखता हूं कि मेरे पिता के आदर्शों को, उनकी मनोभावनाओं को और उनकी न्याय नीति को इस राज्य में हमेशा के लिये अटल और अमर बना जाऊं. ईश्वर इसमें मेरी और मेरे रिआया की सहायता करें.

साहबान, जगदीश्वर का नाम लेकर मैं अब इस "हाई कोर्ट" को खुला जाहिर करता हूं.





His Highness seeing the Scindia School Museum with Principal Pearce.

# Speech by His Highness at the Scindia School Gathering.

Gwalior, 11th November 1937.

---

LADIES AND GENTLEMEN,

It affords me much pleasure to be able to preside for the second time over this function which marks the opening of your annual celebrations; and I thank you warmly for the hearty welcome you all have given me to-day.

I have followed with interest the opening remarks of Sir Manubhai Mehta, the Home Minister, and also the report of the Principal. From what Mr. Pearce has just told us, I am glad to learn that the members of the school staff are evincing due interest in their work: and I congratulate the school for the very satisfactory result which it has been able to achieve in the last two yearly examinations. I expect and hope that the coming years will continue to witness similar happy results. I am glad that the members of the Governing Body are also carefully studying the needs and interests of the school.

Gentlemen, this being a festive occasion when some relaxation from the serious cares of life's responsibilities may be looked for, I have no intention of detaining you longer than necessary. Nor am I going to read to you anything in the nature

of a convocation address on this occasion. All I wish to tell you is that this school which was raised and reared by my illustrious father with many high hopes and expectations shall continue to enlist my abiding interest: and that any recommendations with regard to its present or future requirements will always receive my sympathetic consideration and treatment.

As you all know, this institution was started by His late Highness for the education and betterment of the sons of the Jagirdars and the Zamindars of this State. His late Highness actually sacrificed himself in promoting the general well-being of all classes of his subjects: and this school was one of his special favourites. But I fear the class of people for whose good so much useful work was being done, did not avail themselves sufficiently of these facilities: and because the Jagirdars would not send their sons to this school in sufficient numbers, the school had to be thrown open for the admission of all classes of boys, though in certain respects it still retains something of its previous character and form.

The address which has been presented to me to-day on behalf of the Old Boys, lays much stress on making increased efforts to spread education among the children of Jagirdars. I must tell you candidly that this result can now only be achieved by the combined efforts of the Jagirdars themselves, because the State has already done enough under the circumstances and is doing and will continue to do all that it can for your advancement. It is you who must appraise and appreciate the importance and value of good education and come forward to take the fullest possible advantage of the many generous facilities which are provided by the Darbar. Every Jagirdar and Zamindar

should deem it to be his paramount duty to impart sound education to his children; and those of you who have sons of the school-going age, should understand that the Scindia School is constitutionally better fitted and equipped to cater to their needs and requirements. You are a more fortunate class in that you possess wealth, position, and local influence which combine to give you that measure of material independence and self-reliance which the masses lack.

Gentlemen, there are two pet aversions of mine about which let me take you in my confidence to-day. The first is that I wish to avoid legislation connected with purely domestic or social matters. I leave it to your own good sense to understand what the Darbar policy about the proper upbringing of your children is; and I will eagerly expect each one of your class to co-operate with me and my government in carrying out that wise policy because it is intended and laid down in clear terms for your own ultimate good.

The second thing I am going to confide in you is that howsoever much I may wish to raise your class, I cannot be expected to sacrifice the interests of the general mass of people for the exclusive benefit of any particular class. It is possible, gentlemen, that my outlook may sometimes be different from yours in certain specific matters. My picture has to include in its setting a much wider perspective than the landscape you behold from your viewpoint. In my scheme of things the villages must have a more prominent place than the villas of the rich. The benefactions of a ruler must radiate to all classes of his subjects with equal benevolence, regardless of the artificial distinctions of class, creed, or colour.



The same with public services. I am glad that you appreciate my policy of associating the Jagirdars with the work of my administration. Given the same education, the same moral stamina, and the same capability as others in the field of competition, you have every advantage of proving your superiority in administrative talents. But, here again, capability and efficiency, competence and integrity of character shall be the chief test to judge a public officer's fitness for responsibility. So that it should be taken for granted that, as in other fields of life, so in the spheres of education and public service also, my watchword to all shall ever be—FIRST DESERVE, THEN DESIRE.

Referring to the Scindia School, it gives me satisfaction to hear from your own statement that "in almost all respects this school compares most favourably with other schools of its type in India, while in certain respects it is even superior and can offer us advantages we could get nowhere else." I hope you will justify this statement still further by sending your own sons to the Scindia School. I will ask the Home Minister to place before me authenticated figures showing the number of Jagirdars' and important Zamindars' sons of school-going age, and the number of those of them who are actually studying in the Scindia School.

The Principal and the staff of the school should also see that the Scindia School lacks nothing which may be considered to be the special attractive feature of outside public schools in India; because while I ask the Jagirdars to make the best use of this institution the school should also try its best to attract them and to win their confidence. Winning the confidence of the Jagirdars is the surest practical test of your efficiency; and until

the prominent Jagirdars do not feel an inward compulsion to send their children here, I do not think this test can be considered as satisfied.

On the subject of education, let me say that I value quality more than quantity. I do not attach much importance to that system of academic education which ignores the development of higher moral qualities. Yes, indeed, I do want *men*, good men, to assist me in my work. Side by side with sound education and intelligence I want to see in a man those moral qualities also which are necessarily found and seen in the personal character and behaviour of a "gentleman."

With regard to your requirements, I will ask you, Mr. Pearce, to let the Home Minister know the precise nature and details of cost, etc., of your wants; and when his recommendations reach me, I will give them my best consideration.

Ladies and gentlemen, let me now conclude, and I do so by thanking you a second time for your cordial reception. I wish your celebrations all success, and the school and all its teachers and students the best of luck.

---

# Speech by His Highness at the Laying of the Foundation Stone of the First Jayaji Gwalior Lancers New Lines.

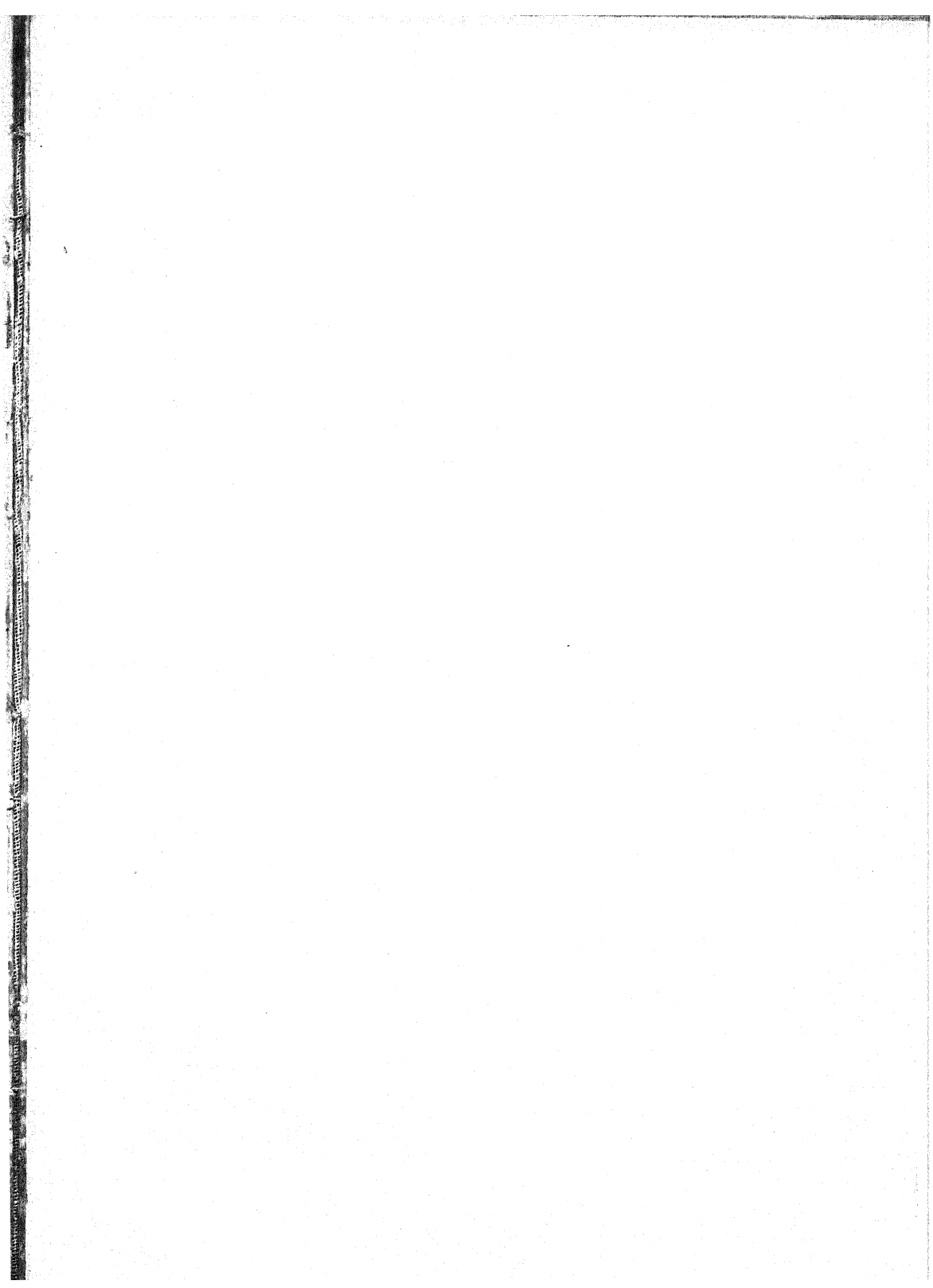
Gwalior, 12th November 1937.

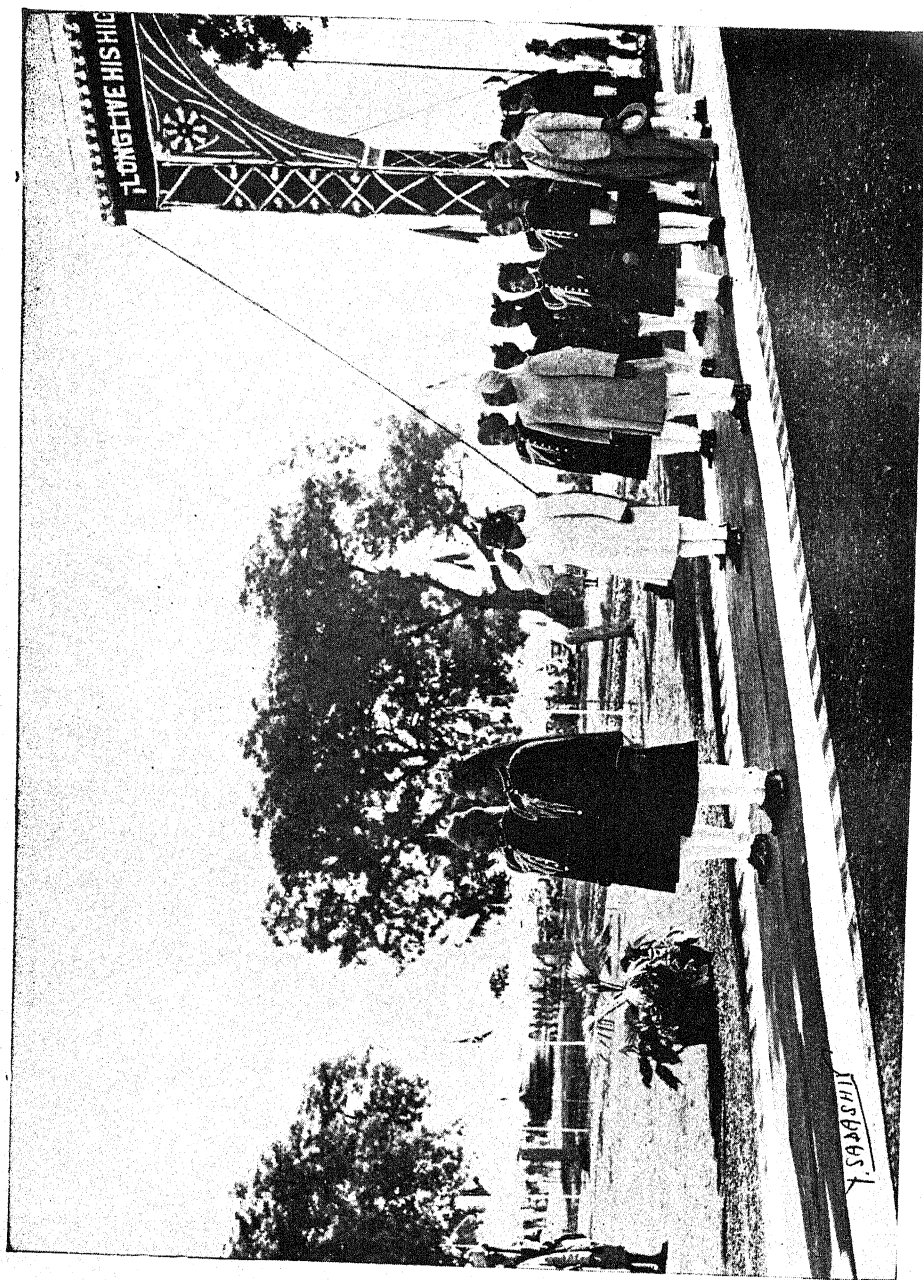
---

LADIES AND GENTLEMEN,

I must thank you warmly for the very hearty welcome you have accorded to me. I sincerely appreciate the very generous and cordial terms in which Col. Sambhaji Rao Bhonsle, Officiating Army Minister, has referred to me and to the interest which I naturally take in this unit, as also in maintaining the high reputation of discipline, efficiency and gallantry which my army has enjoyed up to the present time. Being a soldier both by birth and tradition, I know what it is to be a soldier, and being the head of a government no one can appreciate the great value and worth of an efficient army more than I do.

An army has been defined somewhere as "a collection of bodies of men, armed, disciplined and organised for war." I hope you will agree with me, gentlemen, when I say that post-war events leading up to the present-day developments in international affairs, have proved beyond the shadow of a doubt that the paramount role which the armed forces of any wide-awake na-





Foundation laying ceremony of the 1st Jayaji Gwallor Lancers New Lines : His Highness's arrival.

tion have to play is not so much the waging of war, as the serving as the bulwark and guarantee of an honourable peace. The age of peace and happiness to which this sore world and its pacifists have been looking forward since the dawn of man's advent on the stage of life has proved itself to be as elusive as a mirage of the Sahara. Might still stands for right in the affairs of Sovereign States, and war is still the ultimate resort by which one nation seeks to assert its will upon the other. War, therefore, is a necessary evil—a necessity as painful and unavoidable as the amputation of a diseased arm.

Ideals are very good and beautiful things in so far as they go; they serve as beacon lights to guide mis-guided man to follow courageously the path of rectitude and justice. I also believe that ideals are indispensable landmarks in the journey of life because without them humanity will be left to grope aimlessly in the dark. But at the same time we must not underestimate the powers of the great son of Lucifer, who is prone to place all possible manner of limitations and difficulties in our path so that we must realise that after all this is an imperfect world and that the invidious distinction created by God between men and his angels is likely to last for some time, at any rate, till the Day of Judgment. This being the case, it is necessary that we should descend from the sublime to the hard realities of life and realise that armies are as necessary for the existence of a nation as are the police, the law courts, colleges, hospitals and the kitchens.

Ladies and gentlemen, you will believe me when I say that it really gives me the creeps when I hear some politicians in this country—men who really ought to know better—talk about the desirability of reducing the strength of the army in India and

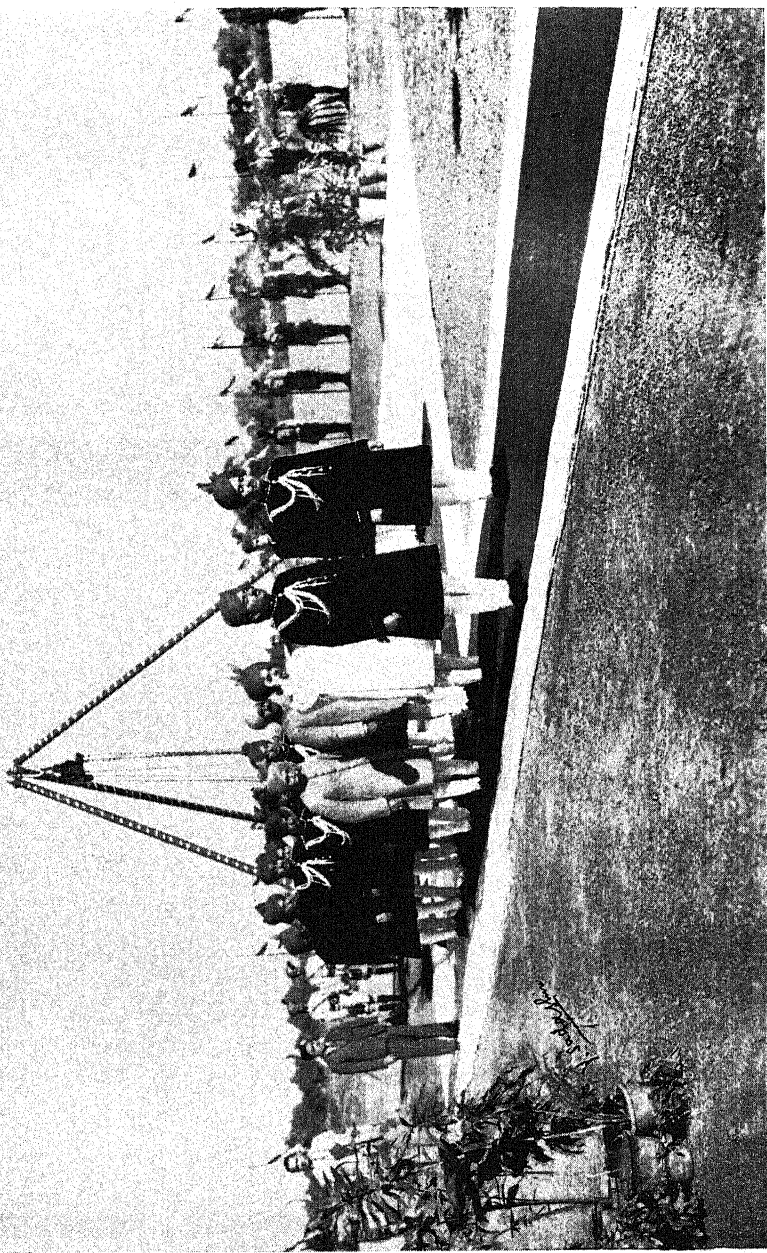
of cutting down the country's military budget to a dead minimum level of economy. I wonder how many of our people including the educated, do realise the real extent of the weaknesses of our country's vast land and sea frontiers from attacks by watchful, hungry and angry rival nations? The present immunity from foreign invasion which has followed the rise and establishment of British power in India perhaps tends to obliterate the memory of those long centuries during which India was continually subjected to the sudden eruption and despoilment by the hordes of Central Asia. But, we must remember that the sinister gateway, Khyber, still stands where it did and that the trans-border powers who are better organised and better equipped to-day, still cherish the memories of the military exploits of their ancestors.

From Karachi to Hindukush the entire range of borderland is inhabited by those truculent tribes who, as a race, are renowned to be the fiercest fighting people in the world. For centuries murder, robbery and rapine have been their main avocation of life. Out of a population of nearly three million souls, 750,000 are regarded as fighting men who are in possession of an effective armament of no less than 300,000 rifles of the most modern make and equipment.

On the North-Eastern side, the Indian frontier touches nearly 1,000 miles of Chinese territory. China's strength is not negligible as can be judged from the fact that her defence to-day is putting to a severe test all the resources and grit of the mighty Japanese Empire. Besides China, the frontiers of the Indian Empire touch 100 miles of French Indo-China and more than 600 miles of Siamese territory. Both France and Siam are powers to be reckoned with since each maintains a considerable army and a powerful air force.







Foundation stone laying ceremony of the First Jayaji Gwalior Lancers New Lines :  
His Highness's departure.

So much about our land frontiers. Then there is the vast magnitude of the seacoast of the Indian peninsula, with its numerous rich settlements and wealthy industrial cities. Keeping in mind these facts, would it not look sheer madness to suggest any reduction in the present limited armed forces of the Empire, specially of India? Devoid of the protection which the British Navy and our armies afford, the predicament of India in the face of attack by any powerful enemy which our country's wealth and importance might provoke, can be easily imagined.

Not only loyalty but a sense of the highest patriotism also demands that Indians should pay special attention to the grim realities of present-day world conditions and to the problems of national defence. Our destinies are bound up with those of Britain. We must therefore look ahead and fortify our defences in such a way that we may be able to stand firmly by the side of the Empire to face any eventuality.

Gwalior being an integral part of India, is always mindful of its duty and responsibility with regard to the problems of national defence. And, as I have stated on previous occasions, I feel sure that His Imperial Majesty the King-Emperor can always count upon my steadfast loyalty and my Government's preparedness to shoulder our due share of responsibility in the defence of India and the British Empire whenever the clarion call of "stand fast" is sounded.

Gentlemen, before I conclude this address I wish to tell you that I am anxious to do all that lies in my power to improve your lot, and to extend to you all possible amenities of a comfortable living. But while I do my duty, I expect you not to fail in doing yours. Soldiers must be strong in body and

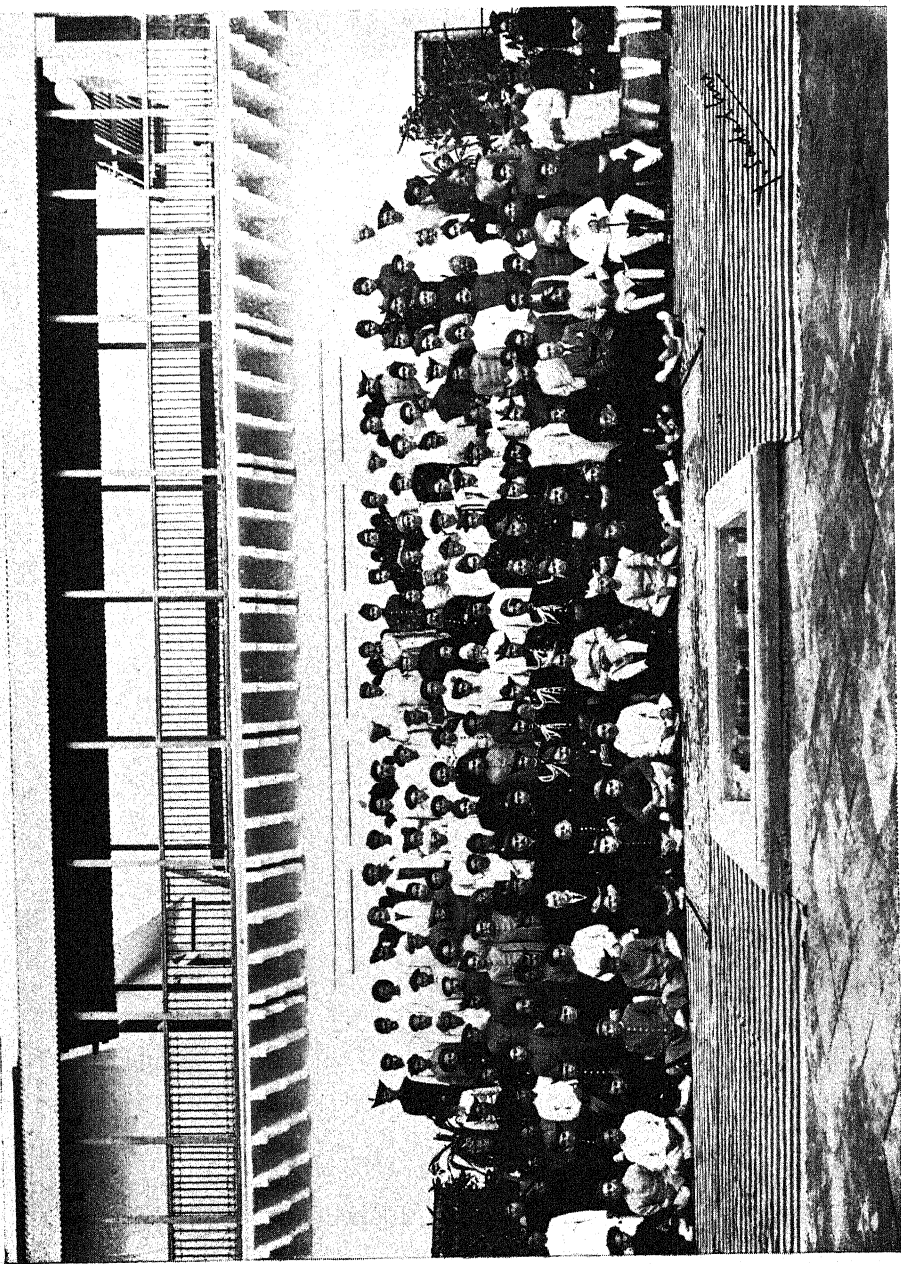
resolute in mind. You must realise that the profession of arms does not only require physical powers and dare-devil courage but that it calls for your developed powers of intellect also. The success of a modern army does not depend so much on its mechanised equipment or numerical superiority, as on the efficiency of its organisation, and more specially on the intellectual superiority of each individual combatant comprising it. Education, therefore, is as essential in your case as it is in the case of the average civilian.

My last advice to you, officers and men of my army, is that while you try to excel as soldiers, you must not be wanting in the duties of good citizenship. In times of peace, you should keep untarnished your reputation as good men, peaceful neighbours and loyal citizens. A soldier who lacks these qualities may be a good fighting man but I cannot respect him as a law-abiding citizen. The expression "an officer and a gentleman" applies not to commissioned officers only but to all ranks of the army in as much as every officer is necessarily a soldier and every soldier, as the saying goes, carries in his knapsack the baton of a field-marshal.

Gentlemen, I thank you once more for your welcome and for giving me a patient hearing. I now proceed to lay the foundationstone of the First Jayaji Gwalior Lancers New Lines and I pray and hope that this edifice, when complete, may prove to be the home and nursery of soldiers worthy of the expectations of their chief Comrade-in-arms and leader—the Scindia. My dear Officers and Soldiers of the First Jayaji Lancers, I pray God may grant you all happiness, prosperity, and success in the achievements of your aims in this place.

---





Opening of the Conference Jagirdaran : His Highness with the Ministers and the Jagirdars.

॥ श्री ॥

कॉन्फरेन्स जागीरदारान, संवत १९९४

के

उद्घाटन के समय

श्रीमंत सरकार महाराजा साहब का भाषण.

लश्कर, तारीख १२ नवम्बर सन १९३७ ई०

सरदार और जागीरदार साहबान,

यों तो पिछले साल इसी महीने में एक मर्तबा आप साहबान ने मजमूई तौर पर मुझे अपनी दावत में निमंत्रित किया था और रोजमर्रा की जिन्दगी में भी आपमें से कई साहबान से मिलते रहने का मौका आता है; मगर इस कॉन्फरेन्स को एड्रेस करने का मेरे लिये यह पहिला ही मौका है. आपकी तरफ से मेरी सालगिरह पर मुबारिकबादी और इस जल्से में दिली खुशी के साथ जो स्वागत किया है उसके लिये शुक्रिया अदा करते हुए मैं आप सब साहबान का स्वागत करता हूं. ईश्वर इस कॉन्फरेन्स को हर तरह पर कामयाब करे.

मुझे इस बात को देखकर वाकई सख्त अफसोस होता है कि संवत १९८७ के बाद आज तक कॉन्फरेन्स जागीरदारान का एक भी



इजलास नहीं हुआ, जिसका असर सिलसिले कारगुजारी में कहां तक बुरा साबित हुआ मोहताज बयान नहीं है. अगर खुद आप साहबान भी पूरी दिलचस्पी के साथ इस सवाल को उठाते तो मैं समझता हूं कि आपके चलते हुए काम में इस तरह की रुकावट पेश न आती; ताहम मुझे खुशी और खुशी के साथ बड़ी तसल्ली भी है कि आज मरे हाथों से इस कॉन्फरेन्स का पुनर्जीवन होने का शुभ अवसर मिला है. मैं खुश हूंगा अगर रियासत के सरदार और जागीरदार साहबान इस कॉन्फरेन्स की अहमियत को पूरे तौर पर समझ कर हर साल इसमें शरीक होकर उत्साह के साथ इसकी कार्यवाही में हिस्सा लेना अपना फर्ज मनसबी समझेंगे. यही नहीं बल्कि मैं यह भी देखूंगा कि जिन प्रस्तावों को आप इस कॉन्फरेन्स में पास करते हैं उनका प्रतिपालन आपमें से हर एक की तरफ से अपनी अपनी जागीरों में किस हद तक और कितनी कामयाबी के साथ किया जाता है. मैं नहीं चाहता कि कोई साहब इस कॉन्फरेन्स को एक नुमाइशी जल्सा समझें और इसमें रेजोल्यूशन्स पास करने के बाद फिर उसकी खबर भी न लें.

साहबान, पेश्तर इसके कि आप साहबान अपने एजेन्डा की कार्रवाई को शुरू करें, मैं अपना फर्ज समझता हूं कि मैं इस मौके पर जागीरदारान के मुतअल्लिक चन्द जरूरी खयालात का इजहार करदूं. न तो राजा, न कोई जागीरदार इस दुनिया से अलग है. हम सब अदना से आला तक इन्सान हैं. इन्सानी सोसाइटी के मेम्बर्स हैं

जिसमें हम एक दूसरे की शिरकत और मदद के बगैर अपना अस्तित्व कायम नहीं रख सकते. हमारे आपस के तअल्लुकात को अमन के साथ रेग्युलेट करने के लिये गवर्नमेन्ट कानून बनाती है और सोसाइटी कस्टम्स और कनवेनशन्स कायम करती है. पस बहैसियत एक इन्सान के हम में से हर एक का फर्ज है कि कानून की, अहकाम दरबार की, हमेशा और हर हालत में पूरी ताजीम और तामील करें. कानून से इन्हराफ करने का कोई शख्स, ख्वाह उसका पोजीशन कितना ही आला व बाला क्यों न हो, मजाज नहीं है. लफ्ज “कानून” में हर हुक्म शामिल है, हर हिदायत शामिल है, जो हस्ब जाब्ता दरबार या दरबार की गवर्नमेन्ट की तरफ से जारी किया जाता है. इस सवाल के जिक्र के साथ मैं यह कहना चाहता हूं कि जागरिदार साहबान भी बलिहाज अपने मनसब और अतिये के दरबार के खास और जिम्मेदार ऐसे काबिल भरोसा मुस्तकिल ऑफिसर्स ही हैं. जिस तरह पर गवर्नमेन्ट के ऑफिसरान का फर्ज आपकी मुनासिब इज्जत, इमदाद और रहनुमाई करने का है, ठीक उसी तरह आपको भी चाहिये कि हत्तुलइमकान अपने तर्जे-अमल से महक्मेजात दरबार को अपने खिलाफ कोई शिकायत का मौका न दें; मस्लन महक्मा मुन्तजिम साहब जागीरदारान को जवाब वक्त पर न आनेकी और अहकाम व हिदायत दरबार की पूरी तामील न होने की बाज बाज साहबान के मुतअल्लिक शिकायत रहती है. साहबान, इस किस्म की शिकायतों का होना न तो हुक्मत की

एफीशियेन्सी और बेहतरी के लिये मुनासिब है, न आप की बाइज्जत पोजीशन के लिये उचित है. मुझे उम्मीद है कि इस बात की तरफ आयन्दा आप सब साहबान की खास तवज्जोह रहेगी.

साहबान, इन्सान की परख करने का सब से आसान तरीका यह है कि उसको उसकी पैदायश, मर्तबे और तालीम से हटाकर जांचा जाय तब आपको उसकी असलियत यानी खसलत मालूम हो जायगी. आदमी की पोजीशन जितनी ऊंची होती है उसको आम के फले-फूले वृक्ष की तरह उतना ही झुककर चलना चाहिये. सबसे बड़ा कीमती गुण इन्सान में शीलता है. आप साहबान को बहैसियत Nobles of the realm हर मायनों में नोबल होना चाहिये; क्योंकि nobility of behaviour से ही शरीफ खानदान के आदमी पहिचाने जाते हैं.

दूसरा फर्ज इन्सानी क्या है? बाल-बच्चों की परवरिश और उनकी तालीम व तरबियत. इस मसले पर जितना भी गौर किया जावे या कहा जावे गैर मुनासिब न होगा. अब्बल तो जागीरदारान को यह सोचना चाहिये कि सिवाय एक बड़े लड़के के उनकी दूसरी औलादों में से और कोई उनका जानशीन यानी जागीर पाने का हकदार नहीं हो सकता. बड़े लड़के को जागीर सम्हालने के काबिल होने की तालीम और एडमिनिस्ट्रेटिव ट्रेनिंग देना कितना जरूरी सवाल है, इस पर मुझे ज्यादा बहस करने की जरूरत मालूम नहीं होती. जायदाद को अक्लमन्दी के साथ सम्हालना और चलाना, सरकारी

जिम्मेदारियों को खुशअसलूबी से अदा करना, रिआया को हर तरह पर संतुष्ट रखना, पूर्वजों के उच्चादर्श को निभाना, यह तमाम अहम फरायज वही जागरिदार अदा कर सकता है जिसने शुरू उम्र में काफी और योग्य तालीम व तरबियत हासिल की है. याद रहे जो शख्स इसके खिलाफ अमल करेगा वह कभी न कभी अपनी कदीमी विरासत और खानदानी इज्जत से जरूर हाथ धो बैठेगा.

अब बाप की, यानी वालदैन की जिम्मेदारी दूसरे बच्चों की निस्बत क्या होनी चाहिये. मैं लड़कों के मुकाबले में लड़कियों का मसला पहले लेता हूं. क्यों, औरतों की बेहबूदी पर ही खानदान, समाज और हमारी कौम का नीज राष्ट्र का दारोमदार है. लड़कियों को भी लड़कों की तरह अच्छी तालीम देना निहायत जरूरी है; क्योंकि खानदान की बुनियाद मातायें ही होती हैं. तालीम के बाद उनकी शादी अच्छे वर के साथ शरीफ खानदान में करना वालदैन का खास जिम्मा है और दूरअंदेश वालदैन को इस बात का भी लिहाज रखना चाहिये कि किसी वजह, मस्लन नाचाकी या दैविक कोप पड़ जाने से लड़की जिन्दगी की जरूरियात के लिये मोहताज या गैर लोगों की आश्रित न होने पावे. लड़कियों की मौजूदा और आयन्दा की जिम्मेदारियां वही शख्स अदा कर सकता है जो दस आमदनी म से ज्यादा से ज्यादा ६ ही खर्च करने का आदी हो. लड़कियों की आबरू और अपने rainy day के लिये प्रॉवीजन करते रहना इज्जतदार आदमी का पहिला कर्तव्य है.

अब रहा “छुट भाइयों” की आयन्दा जिन्दगी का सवाल. बिला तालीम पाये वह जागीर पर बोझ हो जाते हैं. उनके नान व नफके के झगड़े खानदान की बरबादी तक का बाइस हो जाते हैं. इंग्लैन्ड के peers लोगों को देखिये, जो peerage पाता है वह House of Lords में बैठता है व दीगर House of Commons में बजर्ये competition यानी अपनी शक्सी लियाकत और काबिलियत के जोर पर चुने जाकर अपना केरियर तैयार करने की खुद कोशिश करते हैं या सिविल, मिलिटरी या naval क्षेत्रों में अपनी किस्मत आजमाई के लिये घर ब्या मुल्क तक को छोड़ देते हैं. वहां के “छुट भाई” निरी खानदानी ठसक लेकर भूखे नहीं मरते, और अपने भाई, चचा या खानदान पर जोंक की तरह चिपटे रहना अपनी बेइज्जती समझते हैं. हमारे मुल्क में जहालत अभी तक इतनी है कि रईसों के सब लड़के अपने को नवाब से कम नहीं समझते हैं, काम करने और कमाई करके खाने से नफरत करते हैं, आखिर दुनिया में दुःख पाते हैं और अपने खानदान तक को जलील करते हैं.

इसलिये मेरा यही कहना है कि शुरू से ही “छुट भाइयों” को, उनकी आदतों को, उनके खयालात को न बिगाड़ो; बल्कि उनको इस फिक्र और फैयाजी से तालीम दो कि वह दरबार की खिदमात वफादारी और काबिलियत से इस तरह पर अंजाम दें कि जिससे वह भी किसी दिन इनायते दरबार के मुस्तहिक होकर उनकी उदारता से,



कृपा से स्वतंत्र मर्तबा पासकें. महज नौकरी पर ही संतुष्ट नहीं रहना चाहिये, बल्कि उनको successful technicians, ब्योपारी और industrialists भी बनाना चाहिये.

जागीरदारों के बच्चों को मुफ्तीद तालीम दिये जाने के संबंध में स्वर्गवासी मेरे परम पूज्य पिता ने जो प्रयत्न किये उनके फल धीरे धीरे इतने समय बाद आज दिखाई दे रहे हैं. यह उसी का फल है कि राज्य में ऊंचे ओहदों के लिये मुझे आप साहबान में से कुछ शख्स मिल सकें. मैं अभी संतुष्ट नहीं हूँ. मैं तभी खुश होऊंगा जब काफ़ी तादाद में आप लोग administration में मेरा हाथ बटावेंगे. मैं उस स्वर्गवासी विभूति का अत्यंत आभारी हूँ कि उन्होंने अपनी दूरदर्शिता से एक ऐसी पॉलिसी बरती जिसका अच्छा फल मैं आज उठा रहा हूँ. पर अब बराबर वक्त बदलता जा रहा है. अगर दरबार सिर्फ आपकी खानदानी मर्तबा और vested interests सामने रख आपको सरविसेज में तरजीह दें तो ऐतराज उठ सकता है और प्रजा के दूसरे तबकों में यह खयाल पैदा हो सकता है कि उनकी हकतलफी हुई. यह मैं जतला देना चाहता हूँ कि आप साहबान को जिम्मेदारी के ओहदों पर तरजीह देना आपके खानदानी traditions और vested interests की वजह से जरूरी है, मगर जब तक आप अपने में काबिलियत और intrinsic merit न पैदा करलें, सिर्फ जागीरदार होने की वजह से आपको तरजीह देना सम्भव न होगा. आपको यह चाहिये कि आप ऐसी काबिलियत पैदा

करें कि आप open competition में कामयाब हो सकें. ऐसा होने पर दरबार आप लोगों के साथ कैसा बरताव करेंगे इसका बयान करने की जरूरत नहीं है.

इस वक्त यह सवाल विशेष महत्वपूर्ण है. मुल्क में हर जगह फिडरेशन का जिक्र चल रहा है. अगर आयन्दा फिडरेशन की ऐसी शक्ल हुई जोकि होना चाहिये, और दरबार ने उसमें शामिल होना मंजूर किया तो ऐसे काबिल शख्सों की जरूरत होगी जो मुल्क के कारोबार में हिस्सा ले सकें और उनका इतना असर भी हो कि इलेक्शन वगैरा में open field में कामयाबी हासिल कर सकें. आप साहबान के लिये फिडरेशन खास अहमियत रखता है. अगर आप में योग्यता होगी, अगर आप मौका न चूकेंगे तो आनेवाली फिडरेशन स्कीम में आपको दरबार की महत्वपूर्ण सेवा करने का मौका मिलेगा.

आपको यह भी याद रखना चाहिये कि पहिले की तरह अब न तो feudalism का सुबह है, न medievalism की शाम है, वक्त की बीसवीं शताब्दी की दो पहर है. अब aristocracy को watertight compartment में अलग बन्द करके रखना गैर मुमकिन है. Scientific inventions ने ब्योपार और industries को इतना ऊंचा चढ़ा दिया है कि उसके मुकाबले में landed aristocracy साये में रह जाती है. सोशल जिन्दगी ने levelling up and levelling down के अमल से vested interest या class privileges को बहुत कम कर दिया है. अब तो सब से मुकद्दम



institution हर नेशन की जिन्दगी में State रह गई है और स्टेट से मुराद personified society से है. पस मैं आपको मशवरा दूंगा कि आप भी अपने विचारों को खयाली दुनिया से उतारकर real actualities of life में ले आवें, ताकि सोसाइटी और स्टेट के काम सुगमता और खूबी के साथ चलते रहें.

ऊपर मैंने इन्सानी कर्तव्य पर बहस की है. अब मैं आपके उन कर्तव्यों के मुतआल्लिक चन्द बातें कह कर अपना भाषण खत्म करता हूं. यह जागीरें और ऐजाज आपको खास कर्तव्य पालन, स्वामि-भक्ति, स्वामि सेवा के लिये मिली है और उन्हीं खिदमात की आयन्दा और हमेशा उम्मीद रखकर नस्लन बाद नस्लन कायम रखी जाती है. मगर दरबार की वफादारी और खैरखाहाना खिदमतगुजारी के अलावा एक बड़ी भारी जिम्मेदारी और भी है जिसका अखीर मैं जिक्र महज इस वजह से करता हूं कि वह सबसे ज्यादा याद रखने के काबिल है. वह बात यह है—जागीरें रियासत के दीगर देहात या परगनात की तरह मेरी सल्तनत के अटूट भाग हैं. किसी को हरगिज यह न खयाल करना चाहिये कि उनका वजूद अलग है. उन इलाकों में रहनेवाली रियाया भी खास मेरी ही रियाया है. जिसकी भलाई, आजादी, उन्नति की आखरी जिम्मेदारी भी मेरी ही है. उस रियाया को मैंने आपकी सुपुर्दगी में सौंपा हुआ है. आप साहबान उसके trustees हैं. पस लाजिम आता है कि उस हिस्से रियाया पर भी उन्हीं कवानीन व कवाअद की पाबन्दी रखी जावे जो राज्य के

दागीर हिस्से में जारी हैं. ऑफिसरान व मुलाजिमान जागीर भी जहांतक कि उन कवानीन के अमल दरामद का तअल्लुक है ऑफिसरान और मुलाजिमान दरबार की हैसियत रखते हैं.

मैं आपसे यह भी उम्मीद करता हूं कि आप खुद खेती में दिलचस्पी लेकर और स्वयं काश्त करके अपने काश्तकारों के सामने नजीर रखेंगे और अपनी माली हालत में भी तरक्की करेंगे.

मैं यह मेहसूस करता हूं कि आपकी माली हालत अच्छी होना निहायत जरूरी है. बिना ऐसा हुए आपके लिये तरक्की करना नामुमकिन होगा; इसलिये राज्य की बागडोर हाथ में लेते ही मैंने हुक्म दिया कि एक कमीशन आपकी मौजूदा माली हालत की पूरी जांच करे. मैं कमीशन की रिपोर्ट का उत्सुकता से इन्तजार कर रहा हूं. वैसे तो मेरा यह पहिला फर्ज है कि मैं रियासत की हर श्रेणी के लोगों की हालत सुधारूं, पर चूंकि राज्य से आपका तअल्लुक खास वकअत रखता है, इसलिये आपके सुधार पर सब से पहिले मेरा ध्यान जाना स्वाभाविक है.

साहबान, अब मुझे इतना कहना बाकी रह गया है कि इस वक्त दुनिया की हालत बहुत नाजुक हो रही है और खौफ है कि न मालूम किस वक्त खतरनाक हो जावे. आप जानते हैं दुनिया की मुख्तलिफ ताकतों के बीच सैकड़ों उलझने पैदा हो जाने से हमारी दुनिया की नेशन्स armed camps और powder magazines बनी हुई हैं. ब्रिटिश स्टेट्समेन की दानिशमंदी उस कयामत की घड़ी को

टालती जाती है, मगर डर है कि मौजूदा international झगड़े कभी न कभी दुनिया में जंग की आग फैला देंगे. अगर ईश्वर न करे वह आग भड़क उठी तो हम भी उसके असर से मेहफूज बच नहीं सकेंगे. उस हालत में मैं और मेरी गवर्नमेन्ट तनदेही और मजबूती के साथ British Empire का साथ देंगे. मुझे उम्मीद है कि आप साहबान भी अपनी अपनी जिम्मेदारियों को अभी से मेहसूस करेंगे और वक्त पड़ने पर अपने वफादार और बहादुर बुजुर्गों की कीर्ति को रियासत की खिदमत करके दुबाला करेंगे.

जागीरदार साहबान, आपने अपने एट्रेंस में जागीर कमेटी के फिर से कायम करने का और इस कॉन्फरेन्स को इंग्लैण्ड के हाउस ऑफ लॉर्ड्स की तरह कार्यक्षम बनाने की ख्वाहिश की है उसपर से मुझे यकीन कामिल है कि आप मेरे कारोबार में मेरा हाथ बटावेंगे.

आपकी पहिली दरख्वास्त की निस्वत यह कहना काफी होगा कि जागीर कमेटी फिर से कायम करने का मैंने हुक्म दे दिया है. मैं उसके कामों को बड़ी दिलचस्पी से देखूंगा और जरूरत मेहसूस हुई तो उसके कारोबार में इजाफा भी किया जावेगा.

रहा सवाल दूसरा, इसके निस्वत आप साहबान कॉन्फरेन्स में बहस करके इसे बाकायदा दरबार में पेश करे. ऐन हाउस ऑफ लॉर्ड्स की शक्ल में हमारे यहां काम हो सकेगा या नहीं? यह सवाल अहम और काबिल बहस है; ताहम मैं यकीन दिलाता हूं कि आप लोग इंग्लैण्ड के लॉर्ड्स के मुवाफिक संगठित रूप में जब काम करने लग जावेंगे

तो सबसे ज्यादा खुशी मुझे ही होगी और ऐसे कामों में मैं आपकी ज्यादा से ज्यादा इमदाद करूंगा,

साहबान, मैं एक बार फिर आपका दिली शुक्रिया अदा करते हुए ईश्वर से प्रार्थी हूँ कि वह इस कॉन्फरेन्स के उद्देश्य की पूर्ति में आपको पूरी सफलता दे.

---

Speech delivered by His Highness the Maharaja  
Scindia at the Bikaner Banquet in reply  
to the Toast proposed by His Highness  
the Maharaja of Bikaner.

Bikaner, the 25th November 1937.

---

YOUR HIGHNESS, LADIES AND GENTLEMEN,

I cannot adequately thank Your Highness, for the most cordial welcome, which you have so kindly extended to me, and for the honour you have done me this evening by proposing my health in so very generous and affectionate terms.

Ever since Your Highness paid a flying visit in November 1936 to Mandsaur to look me up, it has been my cherished desire to visit your capital and nothing afforded a better opportunity than this, when, as a dutiful nephew, I should have come personally to pay my respects to Your Highness. I need hardly say how delighted I am to have participated in the festivities which are now going on throughout the State in commemoration of the 50th anniversary of Your Highness' accession to the throne. Allow me to offer you my warmest felicitations on this auspicious occasion and to couple with it my earnest desire that the Almighty may grant you another spell of benevolent and eventful reign. May we all assemble here again to celebrate another epoch-making landmark in the



history of this State—I mean—the Diamond Jubilee of His Highness the Maharaja of Bikaner.

Ladies and Gentlemen, I am deeply touched by the affectionate reference which His Highness has just made to the life and work of my beloved father, and to the traditional friendship and goodwill which has subsisted for a long time between the ruling houses of Bikaner and Gwalior. I value nothing more than this relationship that had so carefully been fostered by Your Highness and my father of revered memory, and it is this tie which engendered in my mind a feeling ever since my birth to revere and respect Your Highness as my Honoured Uncle. My one desire is that God may give prudence and foresight to the future Rulers of both the houses so that this long standing friendship may ever grow stronger and stronger.

Your Highness gives me a great compliment when you speak so highly about the humble contribution which I have been able to make during the first year of my rule towards the service of my people. One year is but a span in the long race of a man's life and I, therefore, could not possibly do anything worth the name to improve the condition of my beloved subjects. But I can assure you, Ladies and Gentlemen, that nothing is closer to my heart than the idea to ameliorate the condition of the forgotten millions living in the remote corners of my State. It is these people who are the backbone of the country and not the drawing room politicians who waste their time and energy in creating sectional warfare.

On this occasion, following Your Highness' example, I refrain from any attempt to make a stereotyped speech this evening, but I cannot resist the temptation of saying something

about what I was privileged to see in this State. Let me frankly tell you that the first impression I had on entering the borders of your State was that the whole country must be a dry desert but when I first beheld serene flow of the Ganga Canal and the beautiful results it had produced in such a short time I had nothing but admiration for Your Highness' genius. This canal has raised flourishing cities where villages could not thrive and reared up a countrywide garden of rich verdure and cultivation in regions where even common grass and shrubs found it an impossible struggle to survive.

But the monumental work of Your Highness is to be seen in the capital city of Bikaner where every wall and every inch of the ground bears the testimony to Your Highness' genius and perseverance. The modern institutions of public utility, the splendid palaces, the city with an up-to-date water supply, beautiful parks and gardens rich in foliage and verdure would give the picture of a fairy-land to a casual visitor. The entire structure of this State, as we find it to-day, is the workmanship of that dynamic master-mind whose energy, thought and spirit pervades every sphere of life of the Bikaner people.

Ladies and Gentlemen, with feelings of such admiration for our illustrious host it is but natural that I should ask you all to fill your glasses and to drink whole-heartedly to the long life, unbroken happiness and continued prosperity of General His Highness Maharaja Sir Ganga Singh Bahadur, the Royal Family and the State of Bikaner.

---



Speech delivered on behalf of the Ruling  
Princes by His Highness the Maharaja  
Scindia at the State Banquet, Bikaner,  
in reply to the Toast proposed by  
His Highness the Maharaja  
of Bikaner.

Lalgarh Palace, Bikaner, the 30th November 1937.

---

YOUR HIGHNESSES, LADIES AND GENTLEMEN,

It is with feelings of very pleasurable emotions that I rise to acknowledge on behalf of my brother Princes, and the other distinguished guests present here, and myself, the *cordiality* of the warm hearted welcome which our kind host has accorded to us, and also to respond to the kindly sentiments of goodwill and friendship, which His Highness has been good enough to associate with our toast.

Your Highnesses, a visit to this interesting and progressive State, more specially as the guests of a host no less renowned, among his other qualities for his lavish hospitality is in itself a matter of great enjoyment. But in the present case there has been added to it the further satisfaction that His Highness and I have been able to renew and cement a *hereditary* friendship.

Thanks to the present auspicious event, my happiness is all the more enhanced by the presence in our midst to-day of so many eminent rulers, worthy representatives and scions of historic royal dynasties, whose glorious traditions, have shed lustre on the history of our country. It is an additional privilege to meet here other notable personages also, whose high merits and services have given them the eminence which they have achieved. Our warmest thanks are due to His Highness the Maharaja of Bikaner for having assembled this brilliant company. I pray and hope that this memorable meeting may prove to be a happy augury of new friendly contacts and that it may reaffirm old friendship and strengthen further the bonds of unity between each one and all the rest of us here. Speaking for myself let me assure you, Ladies and Gentlemen, that I will cherish dearly the remembrance of this memorable meeting and value highly the friendship contracted here.

Ladies and Gentlemen, it is my delightful privilege now to convey to our worthy host an expression of our combined and very sincere congratulations on this happy commemoration of his Golden Jubilee and to offer to him our united good wishes for his continued health and long life. There are comparatively few among us, Your Highnesses, that can point to a career more remarkable for its untiring devotion to duty more single heartedly given to the prosecution of one great aim and the one great ideal of life, than that of His Highness. A Ruler and a Statesman, as a Scholar and a sportsman, as a leader and a soldier, and what is more—as a man among men, the Maharaja of Bikaner has achieved renown everywhere. His is an example as remarkable for its varied interests and great achievements as for the

depth and compass of his mind and the steadfastness of his determination.

To be able to grasp the *intrinsic* value of His Highness' services to his State, one must first acquaint oneself with the geological condition of these territories with the geographical position it occupies and also with the actual condition of things prevailing here fifty years ago. Having done this, one should study the administration reports now published by His Highness' Government. It will then be seen what marvellous changes have taken place during His Highness' rule. Not taking into account the earlier period of minority administration, the revenues of the State during the 37 years of His Highness' active rule have gone up from 20 lacs to one crore and 25 lacs a year; and the population has risen from half a million to one million.

The greatest service which His Highness rendered to his people is the introduction and the completion of the Ganga Canal project and the progressive multiplication of the means of communication throughout the State. His Highness with the instinct of a genius had visualised that no greater gift which he could give to his people would conduce more to their happiness and prosperity than an adequate provision for the means of irrigating the desert regions and the opening of a network of Railways and roads to connect the important centres of the State not only between themselves but with the rest of the world. Here is an example that we may all emulate and follow with advantage.

I agree with His Highness of Bikaner that our country is passing through a critical period at present. With your permission, Your Highness, I would rather go one step further and

tell you that India, like the rest of the exasperated world, is in a state of active fermentation to-day. And he will indeed be a very bold man who would dare to foretell what there is in store for us to-morrow. I think, however, that there is no cause to feel alarmed over these new developments as long as we are useful to our country and the Commonwealth of the British Empire.

Your Highnesses, before I conclude, permit me to lend my whole-hearted support to the wish so feelingly expressed by His Highness the Maharaja of Bikaner, that there is a greater need of unity among us to-day, than has been the case ever before. We need unity, not only between Rulers of States, but primarily between the Rulers and the great mass of our peoples. For, it should not be forgotten that the true conception of an Indian State cannot be recognised as complete unless and until, we succeed, in establishing a complete identity of interests and purpose between ourselves and our subjects. Your Highness, I feel convinced that if we could but win the confidence and love of our own people nothing can jeopardise our traditional rights, honours and dignities, of which we are justly so proud and jealous. These will be fortified for us in the loyal and loving hearts of our people.

Ladies and Gentlemen, it is not my intention to touch here any controversial issues of party politics. The occasion does not warrant such a discussion. But I repeat that our drive towards unity should begin from our own homes and then proceed, step by step, till we are able to bring about a closer and honourable union between a united India and the great Empire to which we have the honour to belong.

In conclusion I wish to offer our warmest thanks once more, to our illustrious host, and to the Maharaja Kumar Sahib of Bikaner for the happy days of pleasure and comfort we have been able to spend here, for the best of entertainments they have so kindly provided for us. We shall carry with us the most pleasurable memories of our stay here, and let me say with confidence that we shall eagerly count the remaining few years at the end of which we hope to gather here again to felicitate His Highness on the ten more years he will have by then added to his age and reign.

Ladies and Gentlemen, while thanking you all most warmly for the hearty manner in which you accepted the toast to our health as proposed by His Highness, I call upon one and all of you here to rise and to drink to the long life and continued happiness of General His Highness Maharaja Sir Ganga Singhji and the Royal House of Bikaner and to the everlasting prosperity of the Bikaner State.



71504